



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 341]

नई दिल्ली, रविवार, दिसम्बर 31, 2017/पौष 8, 1939

No. 341]

NEW DELHI, SUNDAY, DECEMBER 31, 2017/PAUSHA 8, 1939

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

(वाणिज्य विभाग)

(पाटन-रोधी एवं संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 30 दिसम्बर, 2017

अंतिम जांच परिणाम

विषय:—चीन जनवादी गणराज्य से “सल्फोनेटिड नेफथालीन फोर्मेलडिहाईड” के आयातों पर पाटन-रोधी शुल्क की जांच।

फा. सं. 14/15/2016-डीजीएडी:—यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथा संशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटन-रोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटन-रोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए।

क. मामले की पृष्ठभूमि

1. यतः मेसर्स हिमाद्री स्पेशियलिटी केमिकल लिमिटेड (जिन्हें आगे “याचिकादाता” कहा गया है) ने समय-समय पर यथा संशोधित सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम भी कहा गया है) और समय-समय पर यथा संशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं की पहचान, उन पर पाटन-रोधी शुल्क का आकलन और संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटन-रोधी नियमावली भी कहा गया है) के अनुसार निर्दिष्ट प्राधिकारी (जिन्हें आगे प्राधिकारी भी कहा गया है) के समक्ष चीन जनवादी गणराज्य (जिन्हें आगे संबद्ध देश भी कहा गया है) के मूल के अथवा वहां से निर्यातित

“सल्फोनेटिड नेफथालीन फोर्मेल्डिहाईड” (जिसे आगे “संबद्ध वस्तु” अथवा “विचाराधीन उत्पाद” भी कहा गया है) के आयातों से संबंधित पाटन-रोधी जांच की शुरुआत करने और पाटन-रोधी शुल्क लगाने के लिए एक आवेदन-पत्र (जिसे आगे “याचिका” भी कहा गया है) प्रस्तुत किया है।

ख. क्रिया-विधि

2. प्राधिकारी द्वारा इस जांच में निम्नोक्त वर्णित क्रिया-विधि का अनुसरण किया गया है:

- (क) प्राधिकारी को उपरोक्त नियमावली के अनुसार संबद्ध वस्तुओं के घरेलू उद्योग की ओर से याचिकादाता से एक आवेदन-पत्र प्राप्त हुआ है, जिसमें चीन जनवादी गणराज्य के मूल के अथवा वहां से संबद्ध वस्तुओं को पाटन होने और उसके परिणाम स्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति होने का आरोप लगाया गया है तथा संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर पाटन-रोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करने का अनुरोध किया गया है।
- (ख) संबद्ध देश के मूल की अथवा वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तुओं के पाटन होने, घरेलू उद्योग को क्षति होने तथा आरोपित पाटन और क्षति के बीच कारणात्मक संबंध होने के पर्याप्त प्रथम दृष्टया साक्ष्य के आधार पर प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के उप नियम 5 के अनुसार आरोपित पाटन और उसके परिणाम स्वरूप घरेलू उद्योग को क्षति होने की पाटन-रोधी जांच की शुरुआत की थी ताकि कथित पाटन की मौजूदगी, उसकी मात्रा और प्रभाव का निर्धारण किया जा सके और पाटन-रोधी शुल्क की ऐसी राशि की सिफारिश की जा सके जिसे यदि निर्यातित “सल्फोनेटिड नेफथालीन फोर्मेल्डिहाईड” के आयातों पर लगाया जाए तो वह घरेलू उद्योग को हुई “क्षति” को समाप्त करने के लिये पर्याप्त होगी।
- (ग) प्राधिकारी ने उपरोक्त नियमावली के उप-नियम 5 के अनुसार जांच शुरू करने से पहले पाटन-रोधी आवेदन-पत्र के प्राप्त होने के बारे में संबद्ध देश के दूतावास/प्रतिनिधियों को अधिसूचित किया था।
- (घ) प्राधिकारी ने संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के खिलाफ पाटन-रोधी जांच शुरू करने के लिए दिनांक 13 अक्तूबर, 2016 को एक सार्वजनिक सूचना जारी की थी, जो कि भारत के रारजपत्र असाधारण में प्रकाशित हुई थी।
- (ङ) प्राधिकारी ने सार्वजनिक सूचना की एक प्रति भारत में संबद्ध वस्तुओं के ज्ञात निर्यातकों, आयातकों और प्रयोक्ता एसोसिएशनों को प्रेषित की थी और उन्हें सलाह दी थी कि वे पत्र की तारीख से चालीस दिनों के भीतर अपने लिखित विचारों से उन्हें अवगत करा दें।
- (च) प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (3) के अनुसार ज्ञात निर्यातकों और भारत में संबद्ध देश के दूतावास को याचिकादाता द्वारा प्रस्तुत किए गए आवेदन-पत्र के अगोपनीय वृत्तान्त की एक प्रति प्रदान की थी। आवेदन-पत्र की एक प्रति उस हितबद्ध पक्षकार को भी प्रदान की थी जिसने उसके लिए अनुरोध किया था।
- (छ) नियम 6 (4) के अनुसार प्राधिकारी ने संबद्ध देश में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों को संबद्ध सूचना मंगाने के लिए प्रश्नावलियां भेजी थीं:-

- (क) मेसर्ज हुबेल एजिंग केमिकल कंपनी लिमिटेड
- (ख) मेसर्ज हेरेयुन इंडस्ट्रियल डेवलेपमेंट लिमिटेड
- (ग) मेसर्ज गीन बिलिंग मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड
- (घ) मेसर्ज झेझियांग केमिकल्स इम्पोर्ट एंड एक्सपोर्ट
- (ङ) मेसर्ज वेलफेंग इंटाकेम कंपनी लिमिटेड
- (च) मेसर्ज शांगडोंग वानशान केमिकल कंपनी लिमिटेड
- (छ) मेसर्ज वेलफेंग होंगले न्यू केमिकल बिलिंग मेटेरियल्स कंपनी लिमिटेड
- (ज) मेसर्ज पेसिफिक स्पॉट लिमिटेड
- (झ) मेसर्ज शांगडोंग लाल्वू वेन्हे केमिकल्स कंपनी लिमिटेड
- (ञ) मेसर्ज जिनान युआंगशेंग केमिकल टेक्नोलॉजी कंपनी लिमिटेड

- (ज) जांच शुरू करने की अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित निर्यातकों/उत्पादकों ने प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं:--
- (क) मेसर्ज हुबेल एजिंग केमिकल कंपनी लिमिटेड
 - (ख) मेसर्ज शांगडोंग वानशान केमिकल कंपनी लिमिटेड
- (झ) पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार आवश्यक सूचना मंगाने के लिए भारत में संबद्ध वस्तुओं के निम्नलिखित ज्ञात आयातकों/प्रयोक्ता एसोसिएशनों को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं:-
- (क) मेसर्ज रेडिएंट इंटरप्राइज केमिकल्स एंड सोल्वेंट एलएलपी
 - (ख) मेसर्ज हिंडियोन केमिकल्स लिमिटेड
 - (ग) मेसर्ज गुजरात पोलिसोल केमिकल्स प्राईवेट लिमिटेड
 - (घ) मेसर्ज रीओप्लास्ट टेक्नोलोजी प्राईवेट लिमिटेड
 - (ङ) मेसर्ज पोलिगोन केमिकल्स प्राईवेट लिमिटेड
 - (च) मेसर्ज डोन कंस्ट्रक्शन केमिकल्स इंडिया लिमिटेड
 - (छ) मेसर्ज वीएसएफ इंडिया लिमिटेड
 - (ज) मेसर्ज डब्ल्यू. आर. ग्रेस एंड कंपनी प्राईवेट लिमिटेड
 - (झ) मेसर्ज सिका इंडिया प्राईवेट लिमिटेड
 - (ञ) मेसर्ज एमोरफोस केमिकल्स प्राईवेट लिमिटेड
- (ञ) जांच शुरू करने की अधिसूचना के उत्तर में निम्नलिखित आयातकों/प्रयोक्ता एसोसिएशनों ने आयातक की प्रश्नावली के उत्तर प्रस्तुत किए हैं अथवा जांच शुरू करने की अधिसूचना के लिखित उत्तर प्रस्तुत किए हैं :-
- (क) मेसर्ज हिंडियोन केमिकल्स लिमिटेड
 - (ख) मेसर्ज रेडिएंट मेसर्ज इंटरप्राइज केमिकल्स एंड सोल्वेंट एलएलपी
 - (ग) मेसर्ज डोन कंस्ट्रक्शन केमिकल्स इंडिया लिमिटेड
- (ट) प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय वृत्तान्त को सभी हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षण के लिए एक सार्वजनिक फाईल के रूप में खुला उपलब्ध कराया था। अनेक हितबद्ध पक्षकारों ने अनेक बार इस सार्वजनिक फाईल का निरीक्षण किया था। जिन हितबद्ध पक्षकारों ने सार्वजनिक फाईल को निरीक्षण करने और उसके दस्तावेजों की प्रतियों का अनुरोध किया था, उन्हें प्रतियां उपलब्ध कराई गई थीं।
- (ठ) प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर जहां कहीं भी उचित था, गोपनीयता के ऐसे दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय समझा है और उसे अन्य पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया है। जहां कहीं भी संभव हुआ है, वहां गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले हितबद्ध पक्षकारों को निदेश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का अगोपनीय वृत्तान्त भी प्रस्तुत करें और नियमावली के अनुसार प्राधिकारी द्वारा उसे सार्वजनिक फाईल में रखा गया था।
- (ड) जितना आवश्यक समझा गया था, याचिकादाता और अन्य हितबद्ध पक्षकारों से अतिरिक्त सूचना मंगाई गई थी। वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ जितना आवश्यक समझा गया था, घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त आंकड़ों का सत्यापन किया गया था।

- (ढ) जांच अप्रैल, 2015- मार्च, 2016 (12 महीनों) तक की अवधि के लिए की गई थी (जिसे आगे “जांच अवधि” अथवा “पीओआई” कहा गया है)। क्षति विश्लेषण की अवधि में वर्ष 2012-13, 2013-14, 2014-15 और जांच अवधि को भी शामिल किया गया है।
- (ण) वाणिज्यिक आसूचना और सांख्यिकी महानिदेशालय (डीजीसीआईएंडएस) और डीजी प्रणाली सीमा-शुल्क से अनुरोध किया गया था कि वे जांच अवधि सहित विगत तीन वर्षों के लिए संबद्ध वस्तुओं के आयातों के ब्यौरे प्रदान करने की व्यवस्था करें और उक्त सूचना डीजीसीआईएंडएस से प्राप्त हो गई थी और उसे वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ अपनाया गया है।
- (त) प्राधिकारी ने भारत में संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन की लागत और क्षति रहित कीमत का आकलन करने के लिए पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-3 में निर्धारित दिशा-निर्देशों के आधार पर यथा संभव घरेलू उद्योग द्वारा प्रस्तुत सूचना की जांच की है, ताकि यह पता लगाया जा सके कि यदि पाटन मार्जिन से कम पाटन-रोधी शुल्क लगाया जाता है, तो क्या वह घरेलू उद्योग की क्षति को दूर करने के लिए पर्याप्त होगा।
- (थ) पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (6) के अनुसार प्राधिकारी ने सभी हितबद्ध पक्षकारों को संबद्ध सूचना मौखिक रूप से प्रस्तुत करने का एक अवसर प्रदान करने के लिए 11 अगस्त, 2017 को एक मौखिक सुनवाई की थी। इस मौखिक सुनवाई में भाग लेने वाले सभी हितबद्ध पक्षकारों से अनुरोध किया गया था कि वे मौखिक सुनवाई में मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित रूप में भी प्रस्तुत करें ताकि उनके निवेदनों का पारस्परिक रूप से आदान-प्रदान किया जा सके जिससे कि बाद में प्रतिवादी पक्षकार उन पर अपने उत्तर प्रस्तुत कर सकें।
- (द) निर्दिष्ट प्राधिकारी में परिवर्तन होने के कारण ऑटोमेटिव टायर मेन्युफैक्चरर्स एसोसिएशनल बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी (2011) के मामले में माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्णय को ध्यान में रखते हुए 2 नवंबर, 2017 को दूसरी मौखिक सुनवाई की गई थी, जिसमें उपस्थित सभी हितबद्ध पक्षकारों से अनुरोध किया गया था कि वे मौखिक रूप से व्यक्त किए गए अपने विचारों को लिखित रूप में भी प्रस्तुत करें ताकि उनके निवेदनों का पारस्परिक रूप से आदान-प्रदान किया जा सके जिससे कि बाद में प्रतिवादी पक्षकार उन पर अपने उत्तर प्रस्तुत कर सकें।
- (ध) इस जांच की कार्यवाही के दौरान हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए और प्राधिकारी द्वारा जहां कहीं भी प्रासंगिक पाए गए निवेदनों का निदान इस दस्तावेज में किया गया है।
- (न) हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना की गोपनीयता के दावों की उनकी पर्याप्तता के संदर्भ में जांच की गई है। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर जहां कहीं भी उचित था, गोपनीयता के ऐसे दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय समझा है और उसे अन्य पक्षकारों के समक्ष प्रकट नहीं किया है। जहां कहीं भी संभव हुआ है, वहां गोपनीय आधार पर सूचना प्रदान करने वाले हितबद्ध पक्षकारों को निदेश दिया गया था कि वे गोपनीय आधार पर प्रस्तुत की गई सूचना का अगोपनीय वृत्तान्त भी प्रस्तुत करें।
- (प) वर्तमान जांच की कार्यवाही के दौरान जहां कहीं भी हितबद्ध पक्षकारों ने आवश्यक सूचना देने से मना किया है अथवा अन्यथा सूचना नहीं दी है अथवा जांच में विशेष रूप से बाधा डाली है, वहां प्राधिकारी ने ऐसे पक्षकारों को असहयोगी माना है और उपलब्ध तथ्यों के आधार पर उसका उल्लेख जांच परिणाम में किया है।
- (फ) हितबद्ध पक्षकार द्वारा *** सूचना को गोपनीय आधार पर प्रस्तुत किया गया है तथा नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी द्वारा उस पर उसी प्रकार से विचार किया गया है।
- (ब) जांच अवधि के लिए प्राधिकारी द्वारा अपनाई गई औसत विनिमय दर, 1 अमरीकी डालर = 65.91 रुपए है।

ग. विचाराधीन उत्पाद और "समान वस्तु"**घरेलू उद्योग के विचार**

3. घरेलू उद्योग के विचार निम्नानुसार हैं:-

- (क) वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद सल्फोनेटिड नेफ्थालीन फोर्मेलडिहाईड है, जो कि नेफ्थालीन की व्युत्पत्तियां है। सल्फोनेटिड नेफ्थालीन फोर्मेलडिहाईड (एसएनएफ) का प्रयोग कंक्रीट के लिए निर्माण उद्योगों में एकमिक्सचर को कम करने के लिए जल के रूप में किया जाता है। साथ ही इसका प्रयोग रबड़ रसायनों, जिप्सम उद्योगों और विशेष रूप से कृषि-रसायन उद्योगों में भी किया जाता है। एसएनएफ द्वारा नेफ्थालीन के सल्फोनेशन और कॉस्टिक सोडा द्वारा प्रक्रिया के न्यूट्रलाइजेशन से निर्मित किया जाता है। यह 100% पाउडर के रूप में और ***% - ***% की ठोस मात्रा में द्रव के रूप में उत्पादित होता है।
- (ख) सल्फोनेटिड नेफ्थालीन फोर्मेलडिहाईड का मुख्य वाणिज्यिक प्रयोग कंक्रीट एडमिक्सचर का उत्पादन करने, चर्मशोधन उद्योग में अनुप्रयोग करने, चमड़े की सहायक क्रियाओं, वस्त्रों की सहायक क्रियाओं, वाट रंजकों, उत्तम कोटि के परिक्षिप्त रंजकों, कृषि संवितरक प्रतिपादनों, रबड़ और वनस्पति मिश्रण में किया जाता है।
- (ग) संबद्ध वस्तुएं सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 38 के अंतर्गत उप-शीर्ष संख्या 3824 40 90 के अंतर्गत आती हैं। तथापि, सीमा-शुल्क की वर्गीकरण निर्देशात्मक मात्र है और यह वर्तमान जांच के कार्य-क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।
- (घ) भारतीय उद्योग द्वारा विनिर्मित सल्फोनेटिड नेफ्थालीन फोर्मेलडिहाईड और संबद्ध देश से निर्यातित उत्पाद के बीच कोई अंतर नहीं है। भारतीय उद्योग द्वारा विनिर्मित और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तुएं भौतिक और रसायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी अनिवार्य उत्पाद विशेषताओं की दृष्टि से तुलनीय हैं। नियमावली के अनुसार उद्योग द्वारा विनिर्मित और संबद्ध देश से आयातित वस्तुएं, समान वस्तुएं हैं। ये दोनों वस्तुएं तकनीकी और वाणिज्यिक रूप से प्रतिस्थापनीय हैं और इसलिए पाटन-रोधी नियमावली के अनुसार घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित वस्तुओं को और संबद्ध देश से आयातित वस्तुओं को को समान वस्तु माना जाना चाहिए।
- (ङ) ग्रेडों की भिन्नता के बारे में यह निवेदन किया जाता है कि जबकि याचिकादाता द्वारा एसएनएफ-सी का अधिकतर उत्पादन किया जाता है और लागत में बचत करने के लिए उसकी आपूर्ति तरल द्रव्य के रूप में की जाती है, इसका मुख्यतया आयात केवल ठोस रूप में किया जाता है। यहां तक कि उन स्थितियों में जिनमें उपभोक्ता उत्पाद को ठोस रूप में खरीदते हैं, इसे वस्तुतः खपत करने से पहले तरल द्रव्य में परिवर्तित किया जाता है।
- (च) याचिकादाता के आंकड़े तरल द्रव्य के रूप में हैं क्योंकि विचाराधीन उत्पाद मुख्यतया तरल द्रव्य के रूप में विनिर्मित किया जाता है और बेचा जाता है। यह निवेदन है कि समस्त मात्राओं को ठोस रूप में अभिव्यक्त किया जाए और उसके बाद उनका समस्त संबद्ध परिकलन किया जाए। इसका दूसरा विकल्प यह है कि तरल द्रव्य की तुलना तरल द्रव्य के साथ और ठोस पदार्थ की तुलना ठोस पदार्थ के साथ की जाए। किसी भी प्रकार से दो रूपों में सामग्री की मात्रा का विधिवत् समायोजन किए बिना घरेलू उत्पाद के द्रव की तुलना, आयातित उत्पाद के ठोस पदार्थ के साथ नहीं की जा सकती है।

ग.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

4. विचाराधीन उत्पाद और समान वस्तु के संबंध में आयातकों, उपभोक्ताओं, निर्यातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (क) विभिन्न ग्रेडों के एसएनएफ की कीमत में अंतर है क्योंकि निर्यात ***% - ***% पाउडर/ठोस रूप में है, जबकि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित उत्पाद ***% - ***% की ठोस मात्रा के साथ द्रव के रूप में है। एसएनएफ को सोडियम सल्फेट की मात्रा के आधार पर तीन विभिन्न रूपों में वर्गीकृत किया जाता है, जो कि ग्रेडों की विशिष्ट भिन्नता की पहचान करने के लिए महत्वपूर्ण है और इनकी लागत के फलस्वरूप उत्पाद की लागत और कीमत पर प्रभाव पड़ता

- है। एक निर्यातक ने भारत में केवल एसएनएफ-सी श्रेणी के उत्पाद का निर्यात किया है, जो कि लागत और कीमत में निम्नतम है। साथ ही यह भी निवेदन किया जाता है कि घरेलू उद्योग की लागत के आंकड़ों पर आधारित सामान्य मूल्य और क्षति रहित कीमत का आकलन केवल एसएनएफ-सी श्रेणी के उत्पाद के संबंध में किया जाए।
- (ख) कृपया यह देखा जाए कि घरेलू उद्योग द्वारा तरल द्रव्य के रूप में बेचे जाने वाले एसएनएफसी को ड्रम में पैक किया जाता है, जबकि मेसर्ज शान्डोंग वानशान केमिकल्स कंपनी लिमिटेड द्वारा निर्यातित वस्तुएं ***कि.ग्रा. के कागज के थैलों में पैक की जाती हैं। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए यह निवेदन किया जाता है कि निर्यात कीमत, सामान्य मूल्य और पहुंच मूल्य तथा क्षति रहित कीमत के बीच उचित तुलना करने के लिए घरेलू उद्योग द्वारा व्यय की गई ड्रम लागत के प्रभाव पर विचार नहीं किया जाए।
- (ग) घरेलू उद्योग द्वारा यह दावा किया गया है कि पाउडर के रूप में एसएनएफ में 100% ठोस सामग्री निहित होती है। वास्तव में यह दावा गलत है। मेसर्ज शान्डोंग वानशान केमिकल्स कंपनी लिमिटेड ***% ठोस सामग्री निहित एसएनएफ का उत्पादन और निर्यात करती है। यह निवेदन किया जाता है कि ***% - ***% के बीच की शुद्धता के साथ (जैसा कि घरेलू उद्योग ने दावा किया है) तरल एसएनएफ की लागत को परिवर्तित करते समय मेसर्ज शान्डोंग वानशान केमिकल्स कंपनी लिमिटेड द्वारा यथा उत्पादित और निर्यातित ***% - ***% ठोस सामग्री को परिवर्तित करने के कारक को प्रयुक्त किया जाए।
- (घ) एतद्द्वारा यह निवेदन किया जाता है कि वर्तमान पाटन-रोधी जांच में आवेदक **"हिमाद्री स्पेशियलिटी केमिकल लिमिटेड"** है और यह कंपनी] चीन जनवादी गणराज्य, यूरोपीय यूनियन, रूस, ईरान और जापान के मूल की अथवा वहां से **"कूड नेफथेलीन और उसके दोनों रूपों में नेफथेलीन"** के आयातों तथा चीन जनवादी गणराज्य के मूल की अथवा वहां से निर्यातित **"रिफाईन्ड नेफथेलीन"** जो कि मुख्यतया सल्फोनटिड नेफथेलीन फोर्मेलडिहाईड (एसएनएफ) बनाने के लिए कच्ची सामग्री के रूप में काम आती है, के आयातों से संबंधित अन्य पाटन-रोधी जांच में भी आवेदक है। इसलिए यह प्रश्न उठता है कि सल्फोनटिड नेफथेलीन फोर्मेलडिहाईड (एसएनएफ) बनाने के लिए नेफथेलीन की **"कच्ची सामग्री"** को किस कीमत पर अंतरित किया गया था। ऐसे अंतरण की कीमत से संबंधित दस्तावेज, निर्दिष्ट प्राधिकारी को प्रदान/प्रस्तुत किए जाएं और यदि संभव हो, तो वे कृपया हमें भी प्रदान किए जाएं ताकि हम उन पर अपनी टिप्पणियां प्रस्तुत कर सकें।

घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

ग. 3 प्राधिकारी द्वारा जांच

5. विचाराधीन उत्पाद सल्फोनेटिड नेफथालीन फोर्मेलडिहाईड है, जो कि नेफथालीन की व्युत्पत्तियां हैं। सल्फोनेटिड नेफथालीन फोर्मेलडिहाईड (एसएनएफ) कंडेन्सेट का प्रयोग कंक्रीट के लिए निर्माण उद्योगों में अधिमिश्रण को कम करने के लिए जल के रूप में किया जाता है। साथ ही इसका प्रयोग रबड़ रसायनों, जिप्सम उद्योगों और विशेष रूप से कृषि-रसायन उद्योगों में भी किया जाता है। एसएनएफ द्वारा नेफथालीन के सल्फोनेशन और कॉस्टिक सोडा द्वारा प्रक्रिया के न्यूट्रलाइजेशन से निर्मित किया जाता है। घरेलू उद्योग द्वारा इसका उत्पादन, 100% पाउडर के रूप में और ***% - ***% की ठोस मात्रा में द्रव के रूप में किया जाता है। जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं में ***% की ठोस मात्रा निहित है।

6. संबद्ध वस्तुएं सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम के अध्याय 38 के अंतर्गत उप-शीर्ष संख्या 3824 40 90 के अंतर्गत आती हैं। तथापि, सीमा-शुल्क की वर्गीकरण निर्देशात्मक मात्र है और यह वर्तमान जांच के कार्य-क्षेत्र पर बाध्यकारी नहीं है।

7. इस तर्क के संबंध में कि अत्यधिक भिन्न कीमत युक्त संबद्ध वस्तुओं के विभिन्न रूप हैं, प्राधिकारी नोट करते हैं कि संबद्ध वस्तुएं दो रूपों में अर्थात् द्रव और ठोस रूप में विद्यमान हैं। याचिकादाता ने घरेलू बाजार में दोनों रूपों में संबद्ध वस्तुओं को बेचा है, जिनमें मुख्यतया द्रव रूप है। तथापि, संबद्ध देश से आयात ठोस रूप में हुए हैं। इसलिए संबद्ध परिवर्तन कारक के साथ द्रव रूप को ठोस रूप में परिवर्तित करने के बाद तुलना की गई है।

8. “क”, “ख” और “ग” जैसे विभिन्न ग्रेडों की संबद्ध वस्तुओं के विद्यमान होने के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि इन कथित ग्रेडों में अंतर सल्फेट की मात्रामें होता है। अधिकतर संबद्ध वस्तुएं “ग” ग्रेड की होती हैं और घरेलू उद्योग ने भी “ग” ग्रेड की वस्तुओं को घरेलू बाजार में बेचा है। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि एसएनएफ के “क”, “ख” और “ग” ग्रेडों के बीच लागत में भिन्नता नहीं है। इस प्रकार कथित “क”, “ख” और “ग” ग्रेडों की किस्मों के लिए पृथक विश्लेषण किए जाने की कोई आवश्यकता नहीं है। इसके अतिरिक्त ग्रेडों के संबंध में आयातों की अधिकतर मात्रा की पहचान नहीं की जा सकती है।

9. रिकार्ड पर उपलब्ध सूचना के आधार पर प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तुओं में कोई ज्ञात अंतर नहीं है। घरेलू उद्योग द्वारा विनिर्मित और संबद्ध देश से आयातित संबद्ध वस्तुएं भौतिक और रसायनिक विशेषताओं, विनिर्माण प्रक्रिया और प्रौद्योगिकी, कार्यों और उपयोगों, उत्पाद विनिर्देशनों, वितरण और विपणन तथा वस्तुओं के टैरिफ वर्गीकरण जैसी अनिवार्य उत्पाद विशेषताओं की दृष्टि से समान वस्तुएं हैं। उपभोक्ता इन दोनों वस्तुओं को एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त कर रहे हैं। इस प्रकार वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ भारत में आवेदक द्वारा उत्पादित और संबद्ध देश से आयातित की जा रही संबद्ध वस्तुओं को समान वस्तु माना जा रहा है।

घ. घरेलू उद्योग का कार्य-क्षेत्र और उसका आधार

घ.1 घरेलू उद्योग के विचार

10. घरेलू उद्योग के कार्य-क्षेत्र और उसके आधार के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (क) याचिका मेसर्स हिमाद्री स्पेशियलिटी केमिकल लिमिटेड द्वारा दायर की गई थी। मेसर्स मंगलौर केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड ने याचिका का समर्थन किया था।
- (ख) जांच की अवधि में एसएनएफ का कुल घरेलू उत्पादन 76453 मी. टन है। अकेले याचिकाकर्ता का हिस्सा 36 प्रतिशत है और समर्थकों के साथ यह कुल घरेलू उत्पादन का लगभग 60-60 प्रतिशत है। अतः याचिकादाता का उत्पादन, भारतीय उत्पादन का मुख्य भाग बनता है और इसलिए नियमावली में उल्लिखित परिभाषा के भीतर याचिकादाता को “घरेलू उद्योग” माना जाना चाहिए।
- (ग) याचिकादाता ने जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं का आयात नहीं किया है और इसके अतिरिक्त वह नियम 2 (ख) में उल्लिखित परिभाषा के भीतर चीन में संबद्ध वस्तुओं के किसी निर्यतक अथवा उत्पादक अथवा भारत में विचाराधीन उत्पाद के किसी आयातक अथवा प्रयोक्ता से भी संबंधित नहीं है।
- (घ) याचिकादाता कंपनी की मेसर्स शांगडोंग हिमाद्री केमिकल इंडस्ट्री लिमिटेड (एसडीएचसीआईएल) में शेयरधारिता है, लेकिन वह संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन नहीं कर रही है। चीन में उसकी संबंधित कंपनी की कोल तार और कोयले का उत्पादन करने की क्षमता है। वह संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करने में दूर तक भी संबंधित नहीं है और इसलिए उसे नियम 2 (ख) के अनुसार बाहर रखने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

घ.1 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

11. घरेलू उद्योग के कार्य-क्षेत्र और उसके आधार के संबंध में उत्पादकों/निर्यातकों/ आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (क) अनुबंध 2.3 में प्रदत्त अन्य उत्पादकों के आंकड़ों को गोपनीय नहीं माना जाना चाहिए क्योंकि उनका अध्ययन करने से यह विश्लेषण किया जा सकता है कि केवल आवेदक को ही क्षति हो रही है अथवा क्षति के कुछ अन्य कारण हैं।
- (ख) आवेदक कंपनी से संबंधित पक्षकारों के संबंध में अतिरिक्त सूचना मंगाई जाए (एसडीएचसीआईएल में नेफथेलीन से संबंधित उठाए गए मुद्दे को देखें)। आवेदक का घरेलू उद्योग होने का दावा संदेहास्पद है क्योंकि अध्यक्ष के भाषण से यह स्पष्ट होता है कि कोल तार पिच का उपयोग कार्बन ब्लैक, नेफथेलीन, एडवांस कार्बन और नेफथेलीन सल्फोनेट आदि का उत्पादन करने के लिए किया जाता है, जबकि आवेदक ने इस तथ्य को छिपाया है कि वह ऐसी कंपनी से संबंधित है, जो ऐसे क्रियाकलाप करती है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

12. याचिका मेसर्स हिमाद्री स्पेशियलिटी केमिकल लिमिटेड द्वारा दायर की गई थी और मेसर्स मंगलौर केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड ने याचिका का समर्थन किया था। याचिकादाता ने न तो संबद्ध वस्तुओं का आयात किया है और न ही वह संबद्ध वस्तुओं के किसी आयातक अथवा निर्यातक से संबंधित है। इसके अतिरिक्त यह नोट किया जाता है कि याचिकादाता का उत्पादन, कुल भारतीय उत्पादन का प्रमुख भाग बनता है। हितबद्ध पक्षकारों द्वारा यह तर्क दिया गया है कि आवेदक ने इस तथ्य को छिपाया है कि वह ऐसी कंपनी से संबंधित है, जो संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन करती है। इस संबंध में यह नोट किया जाता है कि याचिकादाता कंपनी की मेसर्स शांगडोंग हिमाद्री केमिकल इंडस्ट्री लिमिटेड (एसडीएचसीआईएल) में शेयरधारिता है, चीन में वह कंपनी विचाराधीन उत्पादन के उत्पादन में शामिल नहीं है। प्राधिकारी ने जांच की है और नोट करते हैं कि चीन में याचिकाकर्ता का संयंत्र न तो नेफ्थालीन का उत्पादन कर रहा है और न ही एसएनएफ का। घरेलू उद्योग ने सुनिश्चित किया है कि वे चीन से घरेलू तौर पर कोलतार पिच का उत्पादन कर रहे हैं और वैश्विक एल्युमीनियम स्मेल्टरों तथा ग्रेफाइट इलैक्ट्रोड कंपनियों के लिए उसे संशोधित करते हैं। अतः इतपुट कोलतार पिच है और उत्पादन भी कोलतार पिच है। इस प्रक्रिया में नेफ्थालीन और एसएनएफ का कोई उत्पादन नहीं है। इस प्रकार याचिकादाता का चीन में स्थित कंपनी से कोई ऐसा संबंध नहीं है, जिससे कि उसे नियम 2 (ख) के अनुसार अपात्र घरेलू उद्योग माना जाए।

13. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकार का यह प्रस्ताव है कि पाटन-रोधी नियमावली के नियम 2 (ख) में उल्लिखित परिभाषा के भीतर याचिकादाता को पात्र घरेलू उद्योग माना जाए और आवेदक उपरोक्त नियमावली के नियम 5 (3) के अनुसार आधार के मानदंड को पूरा करता है।

ड. गोपनीयता और अन्य मुद्दे

ड.1 घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन

14. गोपनीयता और अन्य मुद्दों के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (क) बाजार आसूचना के अनुसार अन्य उत्पादक की सूचना प्रदान की गई है। इसके अतिरिक्त अनुबंध 2.3 में उत्पादन के ब्यौरे दिए गए हैं। याचिकादाता के अतिरिक्त अनुबंध 2.3 से अन्य सभी उत्पादकों के हिस्से और उसकी प्रवृत्ति का पता लगाया जा सकता है।
- (ख) याचिकादाता ने जांच शुरू करने को यथोचित ठहराने के लिए पर्याप्त सूचना प्रदान की है। याचिकादाता ने आवेदन-पत्र के प्रपत्र के अंतर्गत अपेक्षित समस्त सूचना प्रदान की है। उसके लिखित विवरण में कुछ प्राचलों के मूल्यांकन में विफलता के संबंध में याचिकादाता का यह निवेदन है कि याचिकादाता के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह आवेदन-पत्र में सभी प्राचलों का मूल्यांकन करे। याचिकादाता का यह दायित्व है कि वह समस्त संबद्ध सूचना प्रस्तुत करे, जो उसने किया है।

ड.2 विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन

15. गोपनीयता और अन्य मुद्दों के संबंध में उत्पादकों/निर्यातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (क) अनुबंध 2.3 में प्रदत्त अन्य उत्पादकों के आंकड़ों को गोपनीय नहीं माना जाना चाहिए क्योंकि उनका अध्ययन करने से यह विश्लेषण किया जा सकता है कि केवल आवेदक को ही क्षति हो रही है अथवा क्षति के कुछ अन्य कारण हैं।
- (ख) पाटन-रोधी जांच की कार्रवाई शुरू करने के लिए प्रदान की गई सूचना अपर्याप्त है। याचिका में लगाए गए आरोप, मुख्यतया अनुमानों और अवधारणाओं पर आधारित हैं। प्राधिकारी याचिका का ध्यानपूर्वक विश्लेषण करने में विफल रहे हैं, अन्यथा उन्होंने यह माना होता कि याचिका में अपर्याप्त आंकड़े हैं। नियम 5 (3) (ख) और “यूएस - कनाडा से सॉफ्टवुड ल्यूम्बर” के मामले पर बल दिया गया है, जिसमें यह बताया गया है कि पर्याप्त साक्ष्य का अभिप्राय, आरोपों और निराधार कल्पनाओं से अधिक है। इस संबंध में मेक्सिको से ग्रे पोर्टलैंड सीमेंट मामले का हवाला भी दिया गया है।
- (ग) जैसा कि याचिका में उल्लिखित है, वर्तमान जांच की शुरुआत तथ्यों के आधार पर नहीं की गई है क्योंकि सभी तथ्य, प्रपत्र-4 “क” में किए गए दावों के विपरीत है।

इ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

16. सूचना की गोपनीयता के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि गोपनीय आधार पर घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना की जांच, पाटन-रोधी नियमावली के नियम 7 के अनुसार दावों की गोपनीयता की पर्याप्तता के संदर्भ में की गई है। प्राधिकारी ने संतुष्ट होने पर जहां कहीं भी उचित था, गोपनीयता के ऐसे दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना को गोपनीय समझा है और उसे सार्वजनिक फाईल में रखा है। साथ ही प्राधिकारी ने उपरोक्त नियम अपनी सुसंगत पद्धति के अनुसार अन्य हितबद्ध पक्षकारों के गोपनीयता के दावों पर भी विचार किया है।

17. याचिकादाता द्वारा प्रदत्त अपर्याप्त सूचना के तर्क के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि याचिकादाता द्वारा आवेदन-पत्र में प्रदत्त सूचना निर्धारित प्रपत्र के अनुसार थी और मामले के केवल प्रथम दृष्टया साक्ष्य के गुण-दोष से संतुष्ट होने पर ही प्राधिकारी ने जांच शुरू की है।

सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण

च.1 घरेलू उद्योग के विचार

18. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (क) हितबद्ध पक्षकारों ने ऐसा कोई कोई साक्ष्य प्रस्तुत नहीं किया है, जिससे ऐसा पता चले कि सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है। याचिकादाता ने श्रेष्ठ उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य संरचित किया है। यह उल्लेख करना भी प्रासंगिक है कि यदि ऐसी कोई सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है, तो हितबद्ध पक्षकार यह प्रमाणित करने के लिए स्वतंत्र हैं कि आयात कीमत, पाटित कीमत नहीं है।
- (ख) वर्तमान मामले में प्राधिकारी द्वारा विचारित जांच अवधि अप्रैल, 2015- मार्च, 2016 (12 महीनों) तक की है। क्षति विश्लेषण की अवधि में वर्ष 2012-13, 2013-14, 2014-15 और जांच अवधि को भी शामिल किया गया है।
- (ग) जांच अवधि का निर्धारण करने का प्रयोजन ऐसी अवधि पर विचार करना है, जिसमें पाटन के कारण क्षति होने का दावा और उसे प्रमाणित किया गया है। निर्धारण की तारीख, पाटन के कारण घरेलू उद्योग की क्षति के विवादास्पद प्रश्न से संबद्ध नहीं है। चूंकि जांच अवधि के आधार पर पाटन के कारण घरेलू उद्योग को क्षति होने का तथ्य प्रमाणित हो चुका है, इसलिए इस प्रयोजनार्थ विचार किए जाने के लिए केवल जांच अवधि के दौरान प्रचलित दशाएं प्रासंगिक, उचित और आवश्यक होनी चाहिए।
- (घ) चीन के उत्पादकों को इस कारण से गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली कंपनियां माना जाना चाहिए क्योंकि चीन में लागतों और कीमतों बाजार प्रतिबलों को प्रतिबिंबित नहीं करती हैं। अनुबद्ध-1 के पैरा 8 में ऐसे प्राचल विनिश्चित हैं, जिन पर बाजार अर्थव्यवस्था का दर्जा स्वीकृत करने के लिए विचार किया जाना चाहिए। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि जब तक इन शर्तों को संतोषजनक ढंग से पूरा नहीं कर लिया जाता है, तब तक चीन की लागतों और कीमतों को नहीं अपनाया जा सकता है।
- (ङ) बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे का विचार जांच अवधि के दौरान प्रचलित प्राचलों पर आधारित है। चूंकि चीन की लागतों और कीमतों को अस्वीकर करने का कारण, अनुबंध-1 के पैरा 8 में सूचीबद्ध कारकों के कारण चीन में लागतों और कीमतों को विकृत करना है, याचिकादाता का निवेदन है कि जांच अवधि, बाजार अर्थव्यवस्था वाली कंपनियों के रूप में चीन के उत्पादकों पर निर्णय लेने के लिए प्रासंगिक है।
- (च) नियम 2 (ख) के परिप्रेक्ष्य में यह सुप्रमाणित कानूनी स्थिति है कि किसी घरेलू उत्पादक द्वारा किए गए आयात अथवा उसका किसी निर्यातक या आयातक से संबंध होने की जांच, जांच अवधि के संदर्भ में की जाती है। यदि केवल जांच अवधि आधार के प्रयोजनार्थ प्रासंगिक है, तो केवल जांच अवधि को ही सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए प्रासंगिक होना चाहिए।

- (छ) चीन के उत्पादकों को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के परिवेश में प्रचालन करने वाली कंपनियों के रूप में माना जाना चाहिए और प्राधिकारी अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण करने की कार्यवाही कर सकते हैं।
- (ज) सामान्य मूल्य का निर्धारण इस कारण से बाजार अर्थव्यवस्था वाले तृतीय देश की कीमत या संरचित मूल्य के आधार पर नहीं किया जाता सकता है कि संबद्ध सूचना सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं है। याचिकादाताओं ने भारत में उत्पादन की लागत के आधार पर सामान्य मूल्य पर विचार करने का दावा किया है।
- (झ) चीन से पाटन मार्जिन न केवल अत्यधिक है, बल्कि पर्याप्त भी है। इस प्रकार भारत में विचाराधीन उत्पाद के अत्यधिक पाटन के विद्यमान होने की पुष्टि होती है।
- (ञ) चूंकि घरेलू उद्योग द्वारा किए गए प्रयासों के बावजूद भी संबद्ध वस्तुओं के उत्पादकों की कीमतें/उद्धरण सार्वजनिक रूप से उपलब्ध नहीं थे, घरेलू उद्योग ने प्रमुख कच्चे माल की अंतर्राष्ट्रीय कीमतों को ध्यान में रख कर भारत में उत्पादन की लागत के आधार पर चीन में सामान्य मूल्य निर्धारित किया है और उसमें बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्ययों का समायोजन किया है और याचिकादाताओं की खपत के मानदंडों को ध्यान में रखा है।

च.2 अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

19. सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन के संबंध में उत्पादकों/निर्यातकों/आयातकों/अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-
- (क) चूंकि विगत में चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है, इसलिए नयाचार की समाप्ति के बाद प्रतिनिधिक देश की प्रथा भी समाप्त हो जानी चाहिए। “ईसी फास्टनर्स” पर अपील निकाय की रिपोर्ट का हवाला दिया जाना चाहिए और उसमें अनुच्छेद 15 की समाप्ति के बाद बाजार अर्थव्यवस्था के दर्जे को स्वतः प्राप्त करने के लिए चीन के लिए सुदृढ़ औचित्य का प्रावधान है। अंतर्राष्ट्रीय कानून के अंतर्गत “पेक्टा सेट सरबंडा” के सिद्धांत को माना जाता है और इसका अभिप्राय यह है कि किसी भी पक्षकार को राजनीतिक प्रयोजन के लिए अंतर्राष्ट्रीय संधियों के अंतर्गत और घरेलू कानूनों की आढ में अपने दायित्वों की अवहेलना नहीं करनी है और इसलिए भारत को प्रतिनिधिक देश के उपागम का उपयोग करना बंद करना चाहिए। दिसंबर, 2016 के बाद चीन की कीमतों के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण करना चाहिए।
 - (ख) साथ ही यह भी निवेदन किया जाता है कि भारत को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की कार्य-प्रणाली का प्रयोग करके चीन के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए विश्व व्यापार संगठन के अंतर्गत अब कोई आधार नहीं है। ऐसी कोई भी कार्यवाही गॉट की अनुच्छेद 6 के असंगत होगी। इस संबंध में यूरोपीय संसद की बाह्य नीतियों का संदर्भ ग्रहण किया जा सकता है।
 - (ग) यह भी उल्लेखनीय है कि मेसर्स शांगडोंग वानशान केमिकल कंपनी लिमिटेड प्रत्यक्ष रूप से और साथ ही एक निर्यातक के माध्यम से भी भारत को संबद्ध वस्तुओं के निर्यात कर रही है। यह अनुरोध है कि चूंकि दोनों ने पृथक उत्तर प्रस्तुत किए हैं, इसलिए दोनों को विशिष्ट पृथक दरें स्वीकृत की जाएं।

च.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

च.3.1 सामान्य मूल्य का निर्धारण – चीन

20. चीन के लिए सामान्य मूल्य का परिकलन करने के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि जांच अवधि के आधार पर घरेलू उद्योग को पाटन के कारण क्षति होने के तथ्य की पुष्टि हो चुकी है, इसलिए वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ केवल जांच अवधि के दौरान प्रचलित दशाएं प्रासंगिक, उचित और आवश्यक हैं। वर्तमान समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच अवधि अप्रैल, 2015 से मार्च, 2016 तक की है। चूंकि अनुच्छेद 15 का उप-पैरा जांच की अधिकतर अवधि के दौरान मान्य था, प्राधिकारी एक ऐसी कार्य-प्रणाली प्रयुक्त कर सकते हैं, जो कि चीन में घरेलू कीमतों अथवा लागतों की कड़ी तुलना पर आधारित हो, यदि जांच अधीन उत्पादक स्पष्ट रूप से यह नहीं दर्शाते हैं कि उक्त उत्पाद का विनिर्माण, उत्पादन और बिक्री करने के संबंध में समान उत्पाद का उत्पादन करने वाले उद्योग में बाजार अर्थव्यवस्था की दशाएं प्रचलित हैं।

21. यह भी नोट किया जाता है कि विगत तीन वर्षों में भारत और विश्व व्यापार संगठन के सदस्य देशों द्वारा पाटन-रोधी जांच में चीन जनवादी गणराज्य को एक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है। चीन जनवादी गणराज्य को तब तक गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है, जब तक कि नियमावली के अनुसार निर्यातक देश अथवा विशिष्ट निर्यातकों द्वारा ऐसी पूर्वधारणा का खंडन नहीं कर दिया जाता है।
22. जांच शुरू करने के चरण में प्राधिकारी ने इस पूर्वधारणा पर कार्रवाई शुरू की थी कि चीन जनवादी गणराज्य एक गैर-अर्थव्यवस्था वाला देश है। जांच शुरू करने पर प्राधिकारी ने चीन में उत्पादकों/निर्यातकों का सलाह दी थी कि वे जांच शुरू करने की सूचना का उत्तर दें और अपनी बाजार अर्थव्यवस्था के दर्ज का निर्धारण करने के लिए संबद्ध सूचना प्रस्तुत करें। प्राधिकारी ने एमईटी प्रश्नावली की प्रतियां सभी ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों को भेजी थीं ताकि वे नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 (3) में निर्धारित मानदंड के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की पूर्वधारणा का खंडन कर सकें। प्राधिकारी ने चीन सरकार से भी अनुरोध किया था कि वह चीन में उत्पादकों/निर्यातकों को संबद्ध सूचना प्रस्तुत करने की सलाह दें।
23. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन के ज्ञात उत्पादकों/निर्यातकों और चीन की सरकार को निर्धारित प्रपत्र में और तरीके से सूचना प्रस्तुत करने की आवश्यकता के बारे में पर्याप्त रूप से सूचित कर दिया गया था और उन्हें इस संबंध में अपने निवेदन करने के लिए पर्याप्त अवसर भी प्रदान किया गया था। केवल एक उत्पादक नामतः मेसर्स शांगडोंग वानशान केमिकल कंपनी लिमिटेड और उसके संबंधित निर्यातक, नामतः मेसर्स हुवेई एजिंग केमिकल कंपनी लिमिटेड ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत किया है।
24. चीन से किसी भी अन्य उत्पादक/निर्यातक ने प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं किया है। इसके अतिरिक्त मेसर्स शांगडोंग वानशान केमिकल कंपनी लिमिटेड ने बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण प्रश्नावली का उत्तर प्रस्तुत नहीं करके बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण का दावा भी नहीं किया है।
25. उपरोक्त स्थिति को ध्यान में रखते हुए और चीन की किसी भी निर्यातक कंपनी द्वारा गैर-बाजार अर्थव्यवस्था की पूर्वधारणा का खंडन नहीं किए जाने पर प्राधिकारी यह उपयुक्त समझते हैं कि वर्तमान जांच में चीन को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना जाए और वे चीन जनवादी गणराज्य के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार आगे की कार्रवाई करते हैं।
26. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार, "गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयात के मामले में, उचित लाभ मार्जिन को शामिल करने के लिए भारत में समान उत्पाद के लिए वास्तविक रूप से भुगतान किया गया अथवा भुगतान योग्य, आवश्यकतानुसार पूर्णतया समायोजित कीमत रहित, सामान्य मूल्य का निर्धारण तीसरे देश के बाजार अर्थव्यवस्था में कीमत अथवा परिकलित मूल्य के आधार पर अथवा भारत सहित ऐसे किसी तीसरे देश से अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव नहीं है, या किसी अन्य उचित आधार पर किया जाएगा। संबद्ध देश के विकास के स्तर तथा संबद्ध उत्पाद को देखते हुए निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा यथोचित पद्धति द्वारा एक समुचित बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश का चयन किया जाएगा और चयन के समय पर उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना पर यथोचित रूप से विचार किया जाएगा। बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी अन्य तीसरे देश के संबंध में किसी समयानुरूपी मामले में की जाने वाली जांच के मामले में जहां उचित हों, समय-सीमा के भीतर कार्रवाई की जाएगी। जांच से संबंधित पक्षकारों को किसी अनुचित विलंब के बिना बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के चयन के विशेष में सूचित किया जाएगा और अपनी टिप्पणियां देने के लिए एक समुचित समयावधि प्रदान की जाएगी।" (टीडीआई का मानक पैरा)।
27. उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए चीन जनवादी गणराज्य से भारत में आयातित संबद्ध वस्तुओं के लिए सामान्य मूल्य का निर्धारण, उत्पादन की लागत के संबंध में श्रेष्ठ उपलब्ध सूचना को ध्यान में रखते हुए तथा बिक्री, सामान्य और प्रशासनिक व्ययों और उचित लाभ मार्जिन को उचित रूप से जोड़ने के बाद "किसी अन्य आधार" पर किया गया है। तदनुसार, जांच अवधि के लिए सामान्य मूल्य ***अमरीकी डालर/मी.टन बनता है।

च.3.2 उत्पादक/निर्यातक मेसर्ज शांगडोंग वानशान कंपनी लिमिटेड और उसके निर्यातक मेसर्ज हुबेई एजिंग केमिकल कंपनी लिमिटेड के लिए निर्यात कीमत

28. प्राधिकारी ने नोट किया है कि मेसर्ज शांगडोंग वानशान केमिकल कंपनी लिमिटेड और उसकी निर्यातक, मेसर्ज हुबेई एजिंग केमिकल कंपनी लिमिटेड उसकी संबंधित कंपनी है, इसलिए प्राधिकारी ने उनके लिए भारित औसत निर्यात कीमत निर्धारित की है, जो कि ***अमरीकी डालर/मी.टन है।

च.3.3 चीन में सभी असहयोगी उत्पादकों/निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत

29. चीन से अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के लिए जिन्होंने इस जांच में भाग नहीं लिया है/सहयोग नहीं दिया है, प्राधिकारी का पाटन-रोधी नियमावली के नियम 6 (8) के अनुसार उपलब्ध श्रेष्ठ तथ्यों के आधार पर निर्यात कीमत निर्धारित करने का प्रस्ताव है। संबद्ध वस्तुओं के अन्य उत्पादकों/निर्यातकों के संबंध में सामान्य मूल्य, निर्यात कीमत और पाटन मार्जिन का निर्धारण, नीचे पाटन तालिका में उल्लिखित अनुसार करने का प्रस्ताव है।

च.3.4 पाटन मार्जिन

30. ऊपर यथा निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत पर विचार करते हुए परकलित किया गया पाटन मार्जिन निम्नानुसार है:-

निर्यातक	सामान्य मूल्य (अमरीकी डालर/मी.टन)	निबल निर्यात कीमत (अमरीकी डालर/मी.टन)	पाटन मार्जिन (अमरीकी डालर/मी.टन)	पाटन मार्जिन % सीमा
शांगडोंग वानशान कंपनी लिमिटेड और हुबेई एजिंग केमिकल कंपनी लिमिटेड	***	***	***	30-40%
शेष	***	***	***	65-75%

छ. क्षति और कारणात्मक संबंध का निर्धारण

31. अनुबंध-II के साथ पठित पाटन-रोधी नियमावली के नियम-11 में किसी क्षति के निर्धारण में यह उपबंध है कि किसी क्षति जांच में "... पाटित आयातों की मात्रा, समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर उनके प्रभाव और ऐसी वस्तुओं के घरेलू उत्पादकों पर ऐसे आयातों के परिणामी प्रभाव सहित सभी संगत कारकों को ध्यान में रखते हुए ..." ऐसे कारकों की जांच शामिल होगी जिनसे घरेलू उद्योग को हुई क्षति का पता चल सकता हो। कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पर विचार करते समय इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान वस्तु की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से की कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती।

32. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटन-रोधी शुल्क लगाने के लिए आवेदन-पत्र मेसर्ज हिमाद्री स्पेशियलिटी केमिकल्स लिमिटेड द्वारा प्रस्तुत किया गया है और मेसर्ज मंगलौर केमिकल्स एंड फर्टिलाइजर्स लिमिटेड ने उसका समर्थन किया है। नियमावली के नियम 2 (ख) के अनुसार याचिकादाता को इस जांच के प्रयोजनार्थ घरेलू उद्योग माना गया है। इसलिए इस निर्धारण के प्रयोजनार्थ नियम 2 (ख) में यथा परिभाषित घरेलू उद्योग बने याचिकादाता की लागत और क्षति संबंधी सूचना की जांच की गई है।

छ.1 घरेलू उद्योग के विचार

33. क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में घरेलू उद्योग द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

(क) वर्ष 2012-13 से 2013-14 तक मांग में वृद्धि हुई है। वर्ष 2014-15 में और उसके बाद विगत वर्ष की तुलना में जांच अवधि में उसमें मामूली गिरावट आई है। वर्ष 2013-14 और 2014-15 में आयातों में भी वृद्धि हुई है और जांच

अवधि में उसमें मामूली गिरावट आई है। आयात विशेष रूप से अधिक थे। आयातों में समग्र रूप से और अपेक्षाकृत रूप वही प्रवृत्ति रही है और वे विशेष रूप से अधिक रहे हैं।

- (ख) कीमत कटौती के संबंध में विदेशी उत्पादकों ने अपनी कीमतें घटा दी हैं और वे घरेलू कीमत में कटौती कर रही हैं और इसका अनुमान नीचे तालिका से लगाया जा सकता है।

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
आयात की मात्रा	मी.टन	5,229	17,304	17,516	17,574
मूल्यांकन योग्य मूल्य	लाख रूपए	779	2,792	2,811	2,242
सीआईएफ कीमत	रूपए /मी.टन	14,897	16,136	16,047	12,760
मूल्यांकन योग्य कीमत	रूपए /मी.टन	15,046	16,297	16,207	12,888
सीमा शुल्क (दर)	%	7.50%	7.50%	7.50%	7.50%
सीमा शुल्क	रूपए /मी.टन	1,128	1,222	1,216	967
उत्पाद शुल्क @ 3%	रूपए /मी.टन	34	37	36	29
आयातों की पहुंच कीमत	रूपए /मी.टन	16,208	17,556	17,459	13,883
निबल बिक्री कीमत	रूपए /मी.टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	रूपए /मी.टन	***	***	***	***
कीमत कटौती (%) सीमा	%	30-40	70-80	70-80	45-55

- (ग) आयात घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में ह्रास कर रहे हैं क्योंकि आयातों की पहुंच कीमत, घरेलू उद्योग की लागत और बिक्री कीमतों के स्तर से काफी कम है। संबद्ध वस्तुएं घरेलू उद्योग को विचाराधीन उत्पाद को अत्यधिक अलाभप्रद कीमतों पर बेचने के लिए विवश कर रही हैं। इस तथ्य के बावजूद कि लागत में कोई गिरावट नहीं आई है, इस अवधि में कीमत में अत्यधिक ह्रास हुआ है।

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
बिक्रियों की लागत	रूपए /मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	134	137	104
बिक्री कीमत	रूपए /मी.टन	***	***	***	***
		100	140	138	95
पहुंच मूल्य	रूपए /मी.टन	16,208	17,556	17,459	13,883

- (घ) घरेलू उद्योग की क्षमता मांग के स्तर के समान है, लेकिन पाटित आयातों के कारण क्षमता उपयोग के जिस अनुकूलतम स्तर को प्राप्त किया जा सकता था, वह अभी तक प्राप्त नहीं हो पाया है।

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
क्षमता	मी.टन	68,000	68,000	68,000	68,000
मांग	मी.टन	95,349	89,365	83,043	89,132

- (ङ) उत्पादन के रूप में घरेलू उद्योग की संवृद्धि नकारात्मक है। पाटित आयातों के कारण बिक्रियों और बाजार के हिस्से के अनुकूलतम स्तर को अभी तक प्राप्त नहीं किया गया है। यहां तक कि बिक्रियों के वर्तमान स्तर को अनुकूलतम कीमत से काफी कम स्तर पर बनाए रखा जा रहा है, जिसके कारण अत्यधिक वित्तीय घाटे हो रहे हैं।
- (च) देश में पाटन के कारण मालसूचियों का स्तर बहुत अधिक है।
- (छ) समग्र क्षति अवधि के दौरान लाभ, ब्याज पूर्व लाभ, नकदी लाभ और नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ सभी बहुत प्रतिकूल बने रहे हैं।
- (ज) जांच अवधि में पाटन मार्जिन और क्षति दोनों सकारात्मक और अत्यधिक हैं।
- (झ) घरेलू उद्योग उत्पाद के लिए क्षति रहित कीमत वसूल नहीं कर पाया है। घरेलू उद्योग द्वारा जिस सतह को प्राप्त किया जा रहा है, वह माने गए वैश्विक रूप से उचित और सामान्य स्तर से बहुत नीचे है।
- (ञ) पाटित आयातों की मात्रा अत्यधिक बनी हुई है।
- (ट) पाटित आयातों के फलस्वरूप कीमत में कटौती ने घरेलू उद्योग को अपनी कीमतों को घटाने के लिए विवश कर दिया है।
- (ठ) पाटित आयातों के कीमत हास के प्रभाव के फलस्वरूप घरेलू उद्योग को अत्यधिक वित्तीय घाटे हुए हैं।
- (ड) देश में अत्यधिक मांग और क्षमताएं होने के बावजूद घरेलू उद्योग को अपने उत्पादन, बिक्रियों, क्षमता उपयोग और बाजार के हिस्से को अपनी क्षमताओं की सीमा तक बढ़ाने से रोका गया है।
- (ढ) पाटित आयातों के परिणाम स्वरूप सीधे लाभ, नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ और नकदी लाभ में गिरावट आई है।
- (ण) मुख्यतया पाटन के कारण घरेलू उद्योग के योगदान के मार्जिन में तेजी से गिरावट आई है।
- (त) अनेक आर्थिक प्राचलों के रूप में घरेलू उद्योग की संवृद्धि नकारात्मक बन गई है।

छ.2 निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

34. क्षति और कारणात्मक संबंध के बारे में निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं और अन्य हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदन निम्नानुसार हैं:-

- (क) घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन स्थिर बना हुआ है और आर्थिक प्राचलों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है।
- (ख) पहुंच मूल्य में कोई घोर परिवर्तन नहीं हुआ है, लेकिन घरेलू बिक्रियां यथावत् बनी हुई हैं जिससे स्पष्ट पता चलता है कि आयात घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन को प्रभावित नहीं कर रहे हैं।
- (ग) केवल आवेदक के निर्यातों में गिरावट आई है और न कि घरेलू बिक्रियों में। इसके साथ कैप्टिव खपत भी कम हुई है, जिसने आवेदक को प्रभावित किया हो सकता है।
- (घ) बाजार का हिस्सा भी यथावत् बना हुआ है। इसके अतिरिक्त आवेदक की मालसूचियों में भी गिरावट आई है।
- (ङ) क्षति का एक प्रमुख कारण कर्मचारियों की बड़ी संख्या है और इसके अतिरिक्त वेतन में वृद्धि होना भी है।
- (च) क्षमता उपयोग ने बमुश्किल गिरावट दर्शाई है क्योंकि आधार वर्ष में यह 55.31 थी और जांच अवधि में यह 40.24 है।

(छ) घरेलू उद्योग मई, 2015 से अगस्त, 2015 तक के चार महीनों तक बंद पड़ा हुआ था। प्राधिकारी द्वारा इसको पर्याप्त रूप से देखने की आवश्यकता है कि घरेलू उद्योग को यदि कोई क्षति हुई है, तो वह घरेलू उद्योग के बंद होने के कारण हो सकती है।

छ.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

35. प्राधिकारी ने विभिन्न हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों को नोट किया है। प्राधिकारी ने पाटन-रोधी नियमावली के अनुसार घरेलू उद्योग की क्षति की जांच की है और हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए निवेदनों पर विचार किया है।

36. पाटन-रोधी नियमावली के अंतर्गत प्राधिकारी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह मात्रा और कीमत दोनों के परीक्षण द्वारा क्षति की जांच करें। क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तु के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव, और (ख) घरेलू उद्योग पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होती है। जहां तक पाटित आयातों की मात्रा का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में अथवा भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में भारी वृद्धि हुई है। जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी के लिए इस बात पर विचार करना अपेक्षित है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों द्वारा कीमत में भारी कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों से कीमत में पर्याप्त स्तर तक गिरावट आई है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी हद तक वृद्धि हो गई होती।

37. जहां तक घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-2 के पैरा (4) में उल्लिखित प्रावधान निम्नानुसार है:

"(4) संबंधित घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में स्वाभाविक और संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले सभी संगत आर्थिक कारकों और संकेतकों, घरेलू कीमतों, पाटन मार्जिन की मात्रा, नकद प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, मालसूची, रोजगार, मजदूरी, वृद्धि पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का मूल्यांकन शामिल होगा।"

38. यह जरूरी नहीं है कि क्षति के सभी प्राचल गिरावट दर्शाएं। कुछ प्राचल गिरावट दर्शा सकते हैं, जबकि कुछ प्राचल सुधार दर्शा सकते हैं। निर्दिष्ट प्राधिकारी सभी क्षति प्राचलों पर विचार करते हैं और उसके बाद यह निष्कर्ष देते हैं कि क्या घरेलू उद्योग को क्षति पाटन के कारण हुई है या नहीं।

39. प्राधिकारी ने निवेदनों में दिए गए तथ्यों और तर्कों को ध्यान में रख कर क्षति के प्राचलों की यथार्थ में जांच की है। अलग अलग मद के आधार पर आर्थिक क्षति के प्राचलों का विश्लेषण करने के लिए ठोस रूप में आयातित मात्रा को द्रव में परिवर्तित किया गया था। द्रव रूप को ठोस रूप में परिवर्तित करने के बाद संरचित सामान्य मूल्य और क्षति रहित कीमत आकलित की गई थी ताकि उसे ठोस रूप में आने वाले आयातों के प्रासंगिक और तुलनीय बनाया जा सके।

(क) मांग का निर्धारण

40. इस प्रयोजनार्थ भारत में उत्पाद की मांग अथवा प्रत्यक्ष खपत को भारतीय उत्पादकों की घरेलू बिक्रियों और सभी स्रोतों से आयातों के योगफल के रूप में लिया गया है। प्राधिकारी द्वारा भारतीय मांग/खपत में संबद्ध देश से आयातों के हिस्से का निर्धारण किया गया है, जो कि निम्नानुसार है।

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
घरेलू उद्योग की बिक्रियां	मी.टन	31,277	21,729	20,185	24,972
अन्य भारतीय उद्योग की बिक्रियां	मी.टन	***	***	***	***
संबद्ध देशों के आयात	मी.टन	5,229	17,304	17,516	17,574
अन्य देशों के आयात	मी.टन	4,643	-	-	-
मांग/खपत	मी.टन	***	***	***	***
मांग/खपत	सूचीबद्ध	100	94	87	93

41. प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्ष 2014-15 तक मांग में गिरावट आई है और जांच अवधि में उसमें वृद्धि हुई है, लेकिन यह अत्यधिक स्तर पर बनी हुई है।

छ.3.2 पाटित आयातों के मात्रा के प्रभाव – आयात की मात्रा और संबद्ध देशों का हिस्सा

42. पाटित आयातों की मात्रा के संबंध में प्राधिकारी को इस पर विचार करने की आवश्यकता होती है कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप से अथवा भारत में उत्पादन अथवा खपत के संबंध में अत्यधिक वृद्धि हुई है। प्राधिकारी ने डीजीसीआईएंडएस द्वारा प्रदत्त कारोबार-वार आयात के आंकड़ों के आधार पर संबद्ध देश और अन्य देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा की जांच की है। क्षति की जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा और पाटित आयातों का हिस्सा निम्नानुसार है:-

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
संबद्ध देश – दृव के रूप में परिवर्तित	मी.टन	5,229	17,304	17,516	17,574
अन्य देश	मी.टन	4,643	-	-	-
कुल आयात	मी.टन	9,872	17,304	17,516	17,574
कुल आयातों में निम्नोक्त के आयातों का हिस्सा					
संबद्ध देशों का हिस्सा	%	52.97	100.00	100.00	100.00
अन्य देशों का हिस्सा	%	47.03	-	-	-
निम्नोक्त के संबंध में संबद्ध देश से आयात					
घरेलू उद्योग का उत्पादन	%	26%	63%	73%	64%
खपत	%	10%	19%	21%	20%

43. क्षति अवधि के दौरान आयातों में वृद्धि हुई है। लगभग समग्र आयात संबद्ध देश से हुए हैं। इसके अतिरिक्त जांच अवधि में भी उत्पादन और खपत के संबंध में आयात अत्यधिक हुए हैं।

छ.3.3 घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के कीमत प्रभाव

44. जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, नियमावली के अनुबंध-2 (2) में निम्नानुसार निर्धारित है :

“जहां तक नियम 18 के उप नियम (2) में किए गए उल्लेखानुसार कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में पाटित आयातों के कारण कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव के कारण कीमत में होने वाली वृद्धि में अन्यथा काफी अधिक ह्रास हुआ है अथवा कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रूकावट आई है जिसमें अन्यथा काफी हद तक वृद्धि हो गई होती।”

45. इसकी जांच की गई है कि क्या भारत में समान उत्पाद की कीमत के पाटित आयातों द्वारा कीमत में अत्यधिक कटौती की गई है या क्या ऐसे आयातों के प्रभाव अन्यथा कीमतों में अत्यधिक ह्रास करते या कीमतों में वृद्धि को रोकते, जो कि अन्यथा अत्यधिक मात्रा में हो गई होती। घरेलू उद्योग की कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच, कीमत कटौती, कम कीमत पर बिक्री होने, कीमत ह्रास और कीमत न्यूनिकरण यदि कोई हुआ है, के संदर्भ में की गई है।

कीमत कटौती

46. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या आयात बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती कर रहे हैं, प्राधिकारी ने ठोस रूप को उपयुक्त परिवर्तन कारक अर्थात्***% ठोस मात्रा के साथ द्रव रूप में परिवर्तित करने के बाद आयातों की पहुंच कीमत की तुलना, घरेलू उद्योग की निबल बिक्री वसूलियों के साथ की है। इस संबंध में व्यापार के समान स्तर पर प्रत्येक संबद्ध देश से उत्पाद के पहुंच मूल्य और घरेलू उद्योग की सभी छूटों और करों के साथ औसत बिक्री कीमत के बीच तुलना की गई है। घरेलू उद्योग की कीमतों का निर्धारण कारखानागत स्तर पर किया गया है।

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
निबल बिक्री कीमत	रूपए/मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	140	138	95
पहुंच कीमत	रूपए/मी.टन	16,208	17,556	17,459	13,883
कीमत कटौती	रूपए/मी.टन	***	***	***	***
कीमत कटौती	%	30-40	70-80	70-80	45-55

47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आयात की पहुंच कीमत, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत के स्तर से काफी नीचे है। इस प्रकार आयात घरेलू उद्योग की कीमतों में कटौती कर रहे हैं।

कम कीमत पर बिक्री

48. प्राधिकारी ने संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग की हुई कीमत में कटौती की भी जांच की है। चूंकि आयात ठोस रूप में हो रहे हैं, उपयुक्त परिवर्तन कारक के साथ ठोस रूप के लिए क्षति रहित कीमत का निर्धारण किया गया था। घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत की तुलना आयातों की भारित औसत पहुंच कीमत के साथ की गई है, जिसे नीचे तालिका में दर्शाया गया है।

क्रमांक	विवरण	यूनिट	चीन
1	पहुंच कीमत	रूपए/मी.टन	***
2	क्षति रहित कीमत	रूपए/मी.टन	***
3	कम कीमत पर बिक्री	रूपए/मी.टन	***
4	कम कीमत पर बिक्री (सीमा)	%	45-55

49. यह नोट किया जाता है कि आयातों की पहुंच कीमत, घरेलू उद्योग की क्षति रहित कीमत से कम थी। प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को जांच अवधि में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के कारण कम कीमत पर बिक्री करने से नुकसान हुआ है।

कीमत ह्रास और न्यूनीकरण

50. यह निर्धारित करने के लिए कि क्या पाटित आयात घरेलू कीमतों का ह्रास कर रहे हैं अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से अत्यधिक स्तर पर कीमत ह्रास हुआ है और कीमत में वृद्धि में रूकावट आई है, जो कि अन्यथा अत्यधिक सीमा तक हो जाती, प्राधिकारी ने क्षति अवधि के दौरान लागतों और कीमतों में परिवर्तन होने पर विचार किया है। इसकी स्थिति नीचे तालिका में दर्शाई गई है:-

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
विक्रियों की लागत	रूपए/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	134	137	104
विक्री कीमत	रूपए/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	140	138	95
पहुंच कीमत	रूपए/मी.टन	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	141	140	111

51. यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की विक्रियों की लागत और विक्री कीमत दोनों में गिरावट आई है। तथापि, विक्री कीमत में गिरावट, विक्रियों की लागत में गिरावट से काफी अधिक है। जांच अवधि में विक्री कीमत, उत्पादन की लागत के स्तर से नीचे बनी हुई है। आयातों की पहुंच कीमत, घरेलू उद्योग की लागत और विक्री कीमत के स्तर से नीचे बनी हुई है। इस प्रकार आयातों से घरेलू बाजार में घरेलू कीमतों में ह्रास होने के प्रभाव का पता चलता है।

छ.3.4 घरेलू उद्योग के आर्थिक प्राचलों पर प्रभाव

(क) पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-2 में उल्लिखित प्रावधान में क्षति का निर्धारण करने में समान उत्पाद के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच करना निहित है। इसके अतिरिक्त नियमावली में यह भी प्रावधान है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच करने में सभी संबद्ध आर्थिक कारकों और सूचकों का तथ्य परक और निष्पक्ष जांच करना शामिल है, जिनका घरेलू उद्योग की स्थिति पर प्रभाव पड़ता है। साथ ही इनमें विक्रियों में वास्तविक और संभावित गिरावट, लाभ, आउटपुट, बाजार के हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर प्रतिलाभ अथवा क्षमता उपयोग, घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक, पाटन के मार्जिन की मात्रा, नकदी प्रवाह पर वास्तविक और संभावित नकारात्मक प्रभाव, माल सूचियां, रोजगार, वेतन, संवृद्धि और पूंजीगत निवेश जुटाने की क्षमता भी शामिल है। घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन की जांच करने से यह पता चलता है कि घरेलू उद्योग को आर्थिक क्षति हुई है। घरेलू उद्योग से संबंधित विभिन्न क्षति प्राचलों का उल्लेख नीचे किया गया है।

(ख) क्षमता, उत्पादन, क्षमता उपयोग और विक्रियां

52. उत्पादन, घरेलू विक्रियों, क्षमता और क्षमता उपयोग के बारे में घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन निम्नानुसार है:-

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
क्षमता	मी.टन	68,000	68,000	68,000	68,000
उत्पादन	मी.टन	37,609	27,556	23,895	27,325
क्षमता उपयोग	%	55%	41%	35%	40%
विक्रियों की मात्रा	मी.टन	31,277	21,729	20,185	24,972

53. यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू बाजार में पर्याप्त मांग होने के बावजूद भी घरेलू उद्योग के उत्पादन और बिक्रियों में गिरावट आई है। क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के क्षमता उपयोग में भी गिरावट आई है।

(ग) लाभ, नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ और नकदी लाभ

54. घरेलू उद्योग की बिक्रियों की लागत, बिक्री कीमत, नकदी लाभ और निवेश का विश्लेषण किया गया है, जो कि निम्नानुसार है:-

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
बिक्रियों की लागत	रूपए/मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	134	137	104
बिक्री कीमत	रूपए/मी.टन	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	140	138	95
लाभ/(हानि) प्रति यूनिट	रूपए/मी.टन	(***)	***	(***)	(***)
	सूचीबद्ध	-100	2	-116	-273
लाभ/(हानि) – कुल	लाख रूपए	(***)	***	(***)	(***)
	सूचीबद्ध	-100	2	-116	-273
नकदी लाभ	लाख रूपए	(***)	***	***	(***)
	सूचीबद्ध	-100	5,774	597	-6,477
पीवीआईटी	लाख रूपए	***	***	***	***
	सूचीबद्ध	100	769	293	(***)
निवेश पर प्रतिलाभ (सीमा)	%	0-10%	0-10%	0-10%	(0)-(10)

55. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग को आधार वर्ष में लाभ, ब्याज पूर्व लाभ और नकदी लाभ के रूप में वित्तीय घाटे हुए हैं, जब कि वर्ष 2013-14 में उसे मामूली लाभ हुआ है, लेकिन उसके बाद उसमें गिरावट आई है। घरेलू उद्योग ने दावा किया है कि समग्र क्षति अवधि के दौरान पाटन हुआ है। जांच अवधि में उसके घाटे और तीव्र हो गए हैं। जांच अवधि के दौरान नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ भी नकारात्मक रहा है।

(घ) मांग में बाजार का हिस्सा

56. घरेलू उद्योग की मांग में बाजार के हिस्से पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच की गई है, जो कि निम्नानुसार है:-

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
घरेलू उद्योग की बिक्रियां	%	32.80	24.31	24.31	28.02
अन्य उत्पादक की बिक्रियां	%	56.84	56.32	54.60	52.27
संबद्ध देश के आयात	%	5.48	19.36	21.09	19.72
अन्य देशों के आयात	%	4.87	-	-	-
कुल	%	100	100	100	100

57. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष से घरेलू उद्योग के बाजार के हिस्से में गिरावट आई है। इसके अतिरिक्त क्षति अवधि में घरेलू उत्पादकों के बाजार के हिस्से में समग्र रूप से गिरावट आई है, जबकि संबद्ध देश के आयातों के बाजार के हिस्से में वृद्धि हुई है। इससे पता चलता है कि उत्पाद के पाटन से घरेलू उद्योग के बाजार का हिस्सा प्रभावित हो रहा है।

(ड) रोजगार, वेतन और उत्पादकता

58. रोजगार, वेतन और उत्पादकता की स्थिति निम्नानुसार है:-

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	संख्या	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	91	102	104
वेतन	लाख रूपए	***	***	***	***
प्रवृत्ति	सूचीबद्ध	100	90	85	101

59. प्राधिकारी नोट करते हैं कि रोजगार की स्थिति यथावत् बनी हुई है तथा वेतन की भी यही प्रवृत्ति है।

(च) मालसूची

60. संबद्ध वस्तुओं की मालसूची से संबंधित आंकड़े नीचे तालिका में दर्शाए गए हैं:-

विवरण	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
प्रारंभिक स्टॉक	मी.टन	***	***	***	***
अंत स्टॉक	मी.टन	***	***	***	***
औसत स्टॉक	मी.टन	***	***	***	***
औसत स्टॉक (सूचीबद्ध)	मी.टन	100	108	85	76

61. प्राधिकारी नोट करते हैं कि आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की माल सूचियों के स्तर में गिरावट आई है।

(छ) पाटन की मात्रा

62. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध देश से आयात पाटित कीमतों पर देश में प्रवेश कर रहे हैं और पाटन का मार्जिन न्यूनतम से अत्यधिक और पर्याप्त है।

(ज) पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता

63. यह देखा गया है कि घरेलू उद्योग की क्षमता अधिकतर अनप्रयुक्त है और घरेलू उद्योग को घाटे हो रहे हैं। इस प्रकार ऐसी स्थिति में पूंजीगत निवेश जुटाने की क्षमता कमजोर प्रतीत होती है।

(झ) संवृद्धि

64. घरेलू उद्योग की संवृद्धि से संबंधित आंकड़े नीचे तालिका में दर्शाए गए हैं:-

संवृद्धि	यूनिट	2012-13	2013-14	2014-15	जांच अवधि
उत्पादन	वाई/वाई	-	65-75%	80-90%	110-120%
घरेलू बिक्रियां	वाई/वाई	-	65-75%	85-95%	120-130%
बिक्रियों की लागत	वाई/वाई	-	130-140%	100-110%	75-85%
बिक्री कीमत	वाई/वाई	-	(10)-(20)%	(0)-(10)%	(0)-(10)%

65. प्राधिकारी नोट करते हैं कि कुछ प्राचलों में घरेलू उद्योग की संवृद्धि कम हुई है।

(ञ) घरेलू कीमतों को प्रभावित करने वाले कारक

66. संबद्ध देश से आयात कीमतों की जांच, लागत ढांचे में परिवर्तन, घरेलू बाजार में प्रतिस्पर्धा और पाटित आयातों से भिन्न कारकों, जिनसे घरेलू बाजार में घरेलू उद्योग की कीमतें प्रभावित हो सकती हैं, से पता चलता है कि संबद्ध देश से आयातित सामग्री का पहुंच मूल्य, घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत और क्षति रहित कीमत से कम है, जिसके द्वारा भारतीय बाजार में कम कीमत पर बिक्री हो रही है। प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद की कीमतें सामान्यतया प्रमुख कच्चे माल की कीमतों के समनुरूप होनी चाहिए और घरेलू उद्योग इन इनपुट कीमतों और आयातों की पहुंच कीमत को ध्यान में रख कर अपनी कीमतें नियत कर रहा है। घरेलू उद्योग ने यह दावा किया है कि चूंकि पाटित आयातों की पहुंच कीमत इतनी कम है कि घरेलू उद्योग के पास इसके सिवाय कोई और विकल्प नहीं है कि वह बाजार कीमतों के समनुरूप अपनी कीमतों को बनाए रखे, जो कि संबद्ध देशों में विदेशी उत्पादकों द्वारा पेश की गई कीमतों द्वारा निर्देशित होती हैं। इस प्रकार संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं का पहुंच मूल्य, घरेलू कीमतों का निर्धारण करने का एक महत्वपूर्ण कारक है।

क्षति पर निष्कर्ष

67. संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा और कीमत प्रभाव तथा घरेलू उद्योग पर उसके प्रभाव की जांच करने के बाद यह नोट किया जाता है कि क्षति अवधि के दौरान संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों की मात्रा में समग्र रूप से वृद्धि हुई है और अपेक्षाकृत आयात अत्यधिक हैं। ये आयात घरेलू उद्योग की कीमतों में अत्यधिक कटौती कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों के कारण कीमत ह्रास का नुकसान उठाना पड़ा है। घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के परिणामी प्रभाव के संबंध में यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में बिक्रियों, उत्पादन, क्षमता उपयोग, लाभ, नकदी लाभ और निवेश पर प्रतिलाभ के संबंध में घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन में गिरावट आई है। घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटे हो रहे हैं।

छ.3.5 अन्य ज्ञात कारक और कारणात्मक संबंध

68. प्राधिकारी ने पाटन और घरेलू उद्योग को हुई क्षति के बीच संबंध की जांच करने के लिए पाटन-रोधी नियमावली में सूचीबद्ध अन्य कारकों को नोट किया है, जिनके कारण घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।

तृतीय देशों से आयात

69. प्राधिकारी ने कारोबार-वार आधार पर डीजीसीआईएंड से प्राप्त संबद्ध वस्तुओं के आयात आंकड़ों की जांच की है और यह नोट करते हैं कि लगभग समस्त आयात संबद्ध देश से हुए हैं।

मांग में संकुचन

70. आधार वर्ष की तुलना में संबद्ध वस्तुओं की मांग में मामूली गिरावट आई है, लेकिन घरेलू उद्योग द्वारा निर्मित क्षमता के लिए पर्याप्त मांग है। इसके अतिरिक्त आधार वर्ष की तुलना में बिक्रियों और उत्पादन में गिरावट, मांग में गिरावट से काफी अधिक है। इस प्रकार मांग में गिरावट आने के कारण घरेलू उद्योग को क्षति नहीं हुई है।

प्रतिस्पर्धा की दशाएं और व्यापार की प्रतिबंधित पद्धतियां

71. व्यापार की ऐसी कोई प्रतिबंधित पद्धति नहीं है, जो कि घरेलू उद्योग की क्षति का कारण हो सकती है।

प्रोद्योगिकी में विकास

72. घरेलू उद्योग द्वारा अपनाई गई विद्यमान प्रोद्योगिकी और प्रक्रिया, विदेशी उत्पादकों के साथ तुलनीय हैं।

खपत के पेटर्न में परिवर्तन

73. विचाराधीन उत्पाद के संबंध में खपत के पेटर्न में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। खपत के पेटर्न में संभावित परिवर्तन, घरेलू उद्योग की क्षति का कारण नहीं हो सकता है।

निर्यात निष्पादन

74. घरेलू उद्योग ने जांच की अवधि में अपने कुल उत्पादन का लगभग 10 प्रतिशत निर्यात किया है। इसके अतिरिक्त, पिछले तीन वर्षों के दौरान निर्यात का अनुपात 2013-14 को छोड़कर, जब यह 27 प्रतिशत था, लगभग 13 प्रतिशत था जो कि कुल उत्पादन में कमी के कारण नामी प्रभाव के कारण हो सकता है। यद्यपि, पूर्ण मात्रात्मक संदर्भ में निर्यात आधार वर्ष से कम हुए हैं, परंतु कुल मिलाकर कुल बिक्री में उनका हिस्सा समान रहा है। अतः घरेलू उद्योग को क्षति प्राथमिक रूप से केवल घरेलू प्रचालनों के कारण प्रतीत होती है।

अन्य उत्पादों के संबंध में घरेलू उद्योग का कार्य-निष्पादन

75. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और बेचे जा रहे अन्य उत्पादों के कार्य-निष्पादन ने प्राधिकारी द्वारा किए गए घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन को प्रभावित नहीं किया है। प्राधिकारी द्वारा विचारित सूचना केवल विचाराधीन उत्पाद से ही संबंधित है।

कारणात्मक संबंध को प्रमाणित करने वाले कारक

76. क्षति अवधि में घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन के विश्लेषण से पता चलता है कि संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन में गिरावट आई है। पाटित आयातों और घरेलू उद्योग की क्षति के बीच कारणात्मक संबंध होने की पुष्टि निम्नलिखित आधार पर होती है:-

- (क) आयात कीमतें घरेलू उद्योग के उत्पादन की लागत के स्तर से बहुत कम हैं।
- (ख) घरेलू उद्योग द्वारा कीमतों में कमी, संबद्ध देश से निर्यातकों द्वारा पेश की गई कम कीमत के कारण की गई है।
- (ग) कीमत में अत्यधिक अंतर होने के कारण घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन में लाभ, नकदी लाभ (नकदी प्रवाह) और नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ के रूप में गिरावट आई है। इस प्रकार घरेलू उद्योग के कार्य-निष्पादन में गिरावट देश में उत्पाद के पाटन के कारण आई है।
- (घ) पाटित आयातों के परिणाम स्वरूप लाभ, नकदी लाभ और नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ में गिरावट आई है।
- (ङ) प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग के लिए क्षति रहित कीमत का निर्धारण किया है। इस प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने कच्ची सामग्री और उपयोग के श्रेष्ठ खपत मानदंड पर विचार किया है। प्राधिकारी ने नियमावली के अनुबंध-3 के प्रावधानों के अनुसार अन्य कारकों के कारण घरेलू उद्योग को हुई क्षति को पृथक और अलग किया है।

ज. क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

77. पाटन-रोधी नियमावली के अनुबंध-3 के अनुसार प्राधिकारी द्वारा यथा निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं की क्षति रहित कीमत की तुलना, संबद्ध देश से आयातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है, ताकि जांच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन का निर्धारण किया जा सके। इस प्रकार से आकलित क्षति मार्जिन निम्नानुसार है:-

विवरण	यूनिट	चीन
क्षति रहित कीमत (एनआईपी)	अमरीकी डालर/मी.टन	***
पहुंच कीमत	अमरीकी डालर/मी.टन	***
क्षति मार्जिन	अमरीकी डालर/मी.टन	***
क्षति मार्जिन %	%	***
क्षति मार्जिन (सीमा)	%	(50-60)

78. यह देखा गया है कि संबद्ध देश के लिए पाटन मार्जिन सकारात्मक और पर्याप्त है।

(ट) प्रकटन पश्चात टिप्पणियां

79. हितबद्ध पक्षकारों से प्रकटन पश्चात निवेदन प्राप्त हो गए हैं। उनमें उठाए गए मुद्दे वही हैं जिन्हें जांच अवधि के दौरान पहले उठाया गया है तथा उनका उपयुक्त रूप से निदान भी कर दिया गया है। तथापि, स्पष्टता को ध्यान में रखते हुए हितबद्ध पक्षकारों के निवेदनों की जांच की गई है जोकि निम्नानुसार है :

ट.1 घरेलू उद्योग के विचार

80. घरेलू उद्योग ने निम्नलिखित निवेदन किए हैं :

- i. घरेलू उद्योग ने घरेलू बाजार में दोनों रूपों में विचाराधीन उत्पाद को बेचा है और द्रव और ठोस रूप में उत्पादों के लिए पृथक सूचना प्रदान की है। ग्रेड-क, ख और ग के बीच लागत अंतर मामूली है, इसलिए कथित किस्मों के ग्रेड के लिए कोई पृथक विश्लेषण करने की आवश्यकता नहीं है।
- ii. याचिकादाता की मैसर्स शांगडोंग डान हिमाद्री कैमिकल इंडस्ट्री लि. (एसडीएचसीआईएल) में शेयरधारिता है, लेकिन वह संबद्ध वस्तुओं का उत्पादन नहीं कर रही है। चीन में संबंधित कंपनी की क्षमता कोल तार पिच और तेल के लिए है तथा यह किसी भी तरह से एस एन एफ या नेफ्थेलीन के उत्पादन से संबंधित नहीं है। इस प्रकार, उक्त कंपनी संबद्ध वस्तुओं के उत्पादन से दूर तक भी संबंधित नहीं है तथा नियम 2 (ख) के अनुसार उसको बाहर रखने का प्रश्न ही नहीं उठता है।
- iii. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने श्रेष्ठ उपलब्ध सूचना के आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है और इसलिए उद्योग की लागत पर विचार किया गया है। क्षतिरहित कीमत का निर्धारण करने के लिए ही काल्पनिक लागत के संघटक हैं और ये उत्पादन की लागत के संबंध में श्रेष्ठ उपलब्ध सूचना का प्रतिनिधिक नहीं करते हैं। इस प्रकार, सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए वास्तविक लागत पर विचार किया जाना चाहिए। तदनुसार, सामान्य मूल्य और पाटन मार्जिन में संशोधन किया जाए।
- iv. जांच अवधि में समग्र रूप से और सापेक्षित रूप में आयात अत्यधिक उच्च स्तर पर हैं। आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में संबद्ध देश से आयातों में तीन गुना वृद्धि हुई है।
- v. घरेलू उद्योग के बाजार के हिस्से में गिरावट आई है जबकि संबद्ध देश के बाजार के हिस्से में केवल क्षति अवधि में वृद्धि हुई है।
- vi. आयातों की पहुंच कीमत, घरेलू उद्योग की लागत, क्षतिरहित कीमत और घरेलू उद्योग द्वारा पेश की जा रही बिक्री कीमत के स्तर से अत्यधिक नीचे बनी हुई है। कीमत में कटौती और कम कीमत पर बिक्री सकारात्मक है।
- vii. क्षति अवधि में पर्याप्त मांग होने के बावजूद भी घरेलू उद्योग के उत्पादन, बिक्रियों और क्षमता उपयोग में गिरावट आई है।
- viii. लाभ, नकद प्रवाह और निवेश पर प्रतिलाभ अत्यधिक नकारात्मक हैं। चीन के उत्पादकों ने उत्पाद की कीमतों में अत्यधिक कटौती की है जिसके फलस्वरूप घरेलू उद्योग को वित्तीय घाटे, निवेश पर नकारात्मक प्रतिलाभ और नकारात्मक नकदी प्रवाह हुआ है।
- ix. पाटनरोधी शुल्क का रूप, पाटनरोधी शुल्क की नियत मात्रा के रूप में लगाया जाना चाहिए (जोकि शुल्क का निर्धारित रूप है)।
- x. अंतिम निर्धारण में शुल्क अमरीकी डॉलरों में लगाए जाने चाहिए। रूपए में अत्यधिक मूल्यह्रास हुआ है और इसलिए निश्चयात्मक शुल्कों को कृपया अमरीकी डॉलरों में निर्दिष्ट किया जाए। भारतीय रूपए में हुए मूल्यह्रास से कच्चे माल की लागतों, प्रयोज्यताओं और अन्य लागतों पर प्रभाव पड़ा है।

ट.2 निर्यातकों, आयातकों, उपभोक्ताओं तथा अन्य हितबद्ध पक्षकारों के विचार

- i. अभिगमन नयाचार 11 दिसंबर, 2016 को समाप्त हो गया है और उसके पश्चात कोई भी देश चीन से आयातों पर कार्रवाई करते समय सामान्य मूल्यों का निर्धारण करने पर मानक नियमों की अवहेलना नहीं करेगा। इससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय पाटनरोधी विनियम, चीन की घरेलू कीमतों से भिन्न आधार पर सामान्य मूल्य का निर्धारण नहीं कर सकते हैं, अन्यथा चीन, विश्व व्यापार संगठन के दायित्वों के असंगत होने को चुनौती दे सकता है।
- ii. निर्यात कीमत, पहुंच मूल्य और क्षति मार्जिन की सीमा के परिकलन की सूचना प्रदान नहीं की गई थी। प्राधिकारी को प्राप्त सूचना पर्याप्त नहीं है और यह निर्यात कीमत और पहुंच मूल्य का परिकलन का आधार प्रदान नहीं करती है।

- iii. 58-127% के रूप में क्षति मार्जिन की सीमा के परिकलन का आधार अज्ञात है। पहुंच लागत, याचिका में बताई गई लागत से बहुत अधिक है और प्राधिकारी द्वारा यथानिर्दिष्ट क्षति मार्जिन, चीन जनवादी गणराज्य में आकलित मार्जिन से बहुत अधिक है।
- iv. 1% कमीशन घटाने का कोई युक्तिसंगत कारण नहीं है क्योंकि दोनों प्रतिवादी पक्षकारों द्वारा सीधे निर्यात किए गए थे और कोई विचौलिया शामिल नहीं था।
- v. मै. शांगडोंग वानशान कैमिकल कंपनी लि. और मै. हुबेई एजिंग कैमिकल कं. लि. संबंधित कंपनियां नहीं हैं। ये कंपनियां एक-दूसरे से संबंधित नहीं हैं। मै. शांगडोंग वानशान कैमिकल कंपनी लि. ने निर्यातक प्रश्नावली के उत्तर के साथ अपनी संबंधित कंपनियों की सूची प्रदान की है जिसमें ऐसी कोई सूचना निहित नहीं है कि मै. हुबेई एजिंग कैमिकल कं. लि. उससे संबंधित कंपनी है। मै. हुबेई एजिंग कैमिकल कं. लि. ने केवल मै. शांगडोंग वानशान कैमिकल कंपनी लि. द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तुओं को भारतीय बाजार में बेचा है।
- vi. उत्पादक और व्यापारी दोनों स्वतंत्र और पृथक प्रयोज्यताएं हैं इसलिए उनके लिए विशिष्ट रूप से पृथक शुल्क दर आकलित की गई है।
- vii. सामान्य मूल्य का परिकलन “किसी अन्य आधार” पर किया गया है और ऐसा आधार अज्ञात है। प्राधिकारी से अनुरोध है कि सामान्य मूल्य का परिकलन करने के लिए प्रयुक्त विधि विनिश्चित करें। प्राधिकारी का यह दायित्व है कि वह प्रकटन विवरण जारी करने से पहले अपनाए गए आधार के अपने निर्णय के बारे में सभी संबंधित पक्षकारों को सूचित करें। प्रकटन विवरण में अपनाया गया आधार, गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए विधि के अंतर्गत निरधारित मानकों को पूरा नहीं करता है।
- viii. कम कीमत पर बिक्री और क्षति मार्जिन में अंतर है। प्रकटन विवरण के विभिन्न पैराओं में भिन्न क्षति मार्जिन दर्शाया गया है। प्राधिकारी को सही क्षति मार्जिन प्रदान करना चाहिए।
- ix. भारतीय उत्पादों और आयातित उत्पादों की तुलना का आधार असंगत है। ठोस उत्पाद को द्रव उत्पाद में परिवर्तित करने के बाद कुछ परिकलन किया गया है और कुछ परिकलन ठोस रूप में किया गया है। सभी परिकलन एक आधार पर ही किए जाने चाहिए।
- x. नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ के दावे बढ़ाचढ़ा कर किए गए हैं। विचाराधीन उत्पाद के लिए नियोजित पूंजी पर 22% का औसत प्रतिलाभ माना जाना उचित है। प्राधिकारी द्वारा निर्धारित क्षतिरहित कीमत अत्यधिक बढ़ा चढ़ाकर निर्दिष्ट की गई है और वह वास्तविक स्थितियों पर आधारित नहीं है। क्षतिरहित कीमत का आकलन करने के लिए उत्पादन की लागत के तत्वों की जांच करने की आवश्यकता है। प्राधिकारी को उद्योग द्वारा अर्जित नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ को तब अपनाना चाहिए था जब उचित लाभ मार्जिन के रूप में कथित पाटन नहीं था और नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ 22% नहीं था।
- xi. नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ 22% गलत है क्योंकि नियोजित पूंजी पर डैब्ट का भाग जिस पर लगभग 10 से 12% की दर से व्याज लगता है, 22% प्रतिलाभ प्रदान करता है। इसके परिणामस्वरूप मंदी की अवधि में नियोजित पूंजी के निवल मूल्य भाग पर 22% से भी प्रतिलाभ प्रदान किया जा रहा है जोकि घरेलू उद्योग को ऐसा अत्यधिक प्रतिलाभ प्रदान करना पूर्णतः गलत है।

ट.3 प्राधिकारी द्वारा जांच

81. यह नोट किया जाता है कि प्रकटन पश्चात चरण में उठाए गए मुद्दों की प्राधिकारी द्वारा उपरोक्त संबद्ध पैराओं में पहले से ही जांच कर ली गई है, लेकिन निवेदनों पर स्पष्टता बनाए रखने की दृष्टि से उनका निदान किया गया है जोकि निम्नानुसार है :

- i. सामान्य मूल्य की संरचना के संबंध में प्राधिकारी यह दोहराते हैं कि वर्तमान जांच के प्रयोजनार्थ अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य संरचित किया गया है। घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त सूचना के अनुसार प्रमुख कच्ची सामग्री के अनुकूलतम खपत मानदंडों, उत्पादन की लागत पर उचित लाभ के साथ घरेलू उद्योग के लिए स्वीकृत स्तर पर प्रमुख कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत, परिवर्तन लागत, ब्याज, एसजीए आदि पर विचार करने के बाद ही सामान्य मूल्य संरचित किया गया है।
- ii. बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण पर चीन से निर्यातकों के दावे के संबंध में उल्लेखनीय है कि इसका समाधान संबद्ध शीर्ष के अंतर्गत कर दिया गया है। इसके अतिरिक्त, प्राधिकारी ने चीन जनवादी गणराज्य में निर्यातकों को बाजार अर्थव्यवस्था निरूपण (एमईटी) पर निर्यातक की पश्नावली की प्रतियां भेजी थीं, लेकिन किसी भी उत्पादक/निर्यातक ने एमईटी का दावा नहीं किया है। इसको ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी चीन जनवादी गणराज्य के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण करने के लिए नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार आगे की कार्रवाई करना उपयुक्त समझते हैं।
- iii. क्षति मार्जिन के परिकलन के तर्क के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि दिनांक 1 मार्च, 2011 की सीमाशुल्क अधिसूचना सं. 15/2011-सी.शु (एन.टी) के अनुबंध III और नियमावली के प्रावधानों तथा परिकलन के लिए निदेशालय में अनुपालन की जा रही समान पद्धति के अनुसार क्षतिरहित कीमत और उत्पादन की लागत का निर्धारण किया गया है।
- iv. इस तर्क के संबंध में कि उत्पादक और निर्यातक पृथक प्रयोज्यताएं हैं और उनके लिए पृथक मार्जिन निर्धारित किया जाना चाहिए, यह नोट किया जाता है कि उत्पादक ने मुख्यतः ऐसे व्यापारी के माध्यम से संबद्ध वस्तुओं के निर्यात किए हैं जिसने जांच में भी उत्तर दिया है और साथ ही सीधे निर्यात भी किए हैं। इन दोनों माध्यमों के लिए पृथक मार्जिन आकलित किया गया है तथा प्राधिकारी की विगत पद्धति के अनुसार उत्पादक के लिए भारित औसत मार्जिन आकलित किया गया है।
- v. नियोजित पूंजी पर प्रतिलाभ के तर्क के संबंध में प्राधिकारी ने क्षतिरहित कीमत का निर्धारण करने में अनुपालन की जा रही सुसंगत पद्धति के अनुसार प्रतिलाभ पर विचार किया है।

ठ. भारतीय उद्योग के हित और अन्य मुद्दे

82. प्राधिकारी का यह मानने का प्रस्ताव है कि सामान्यतः पाटन-रोधी शुल्क का उद्देश्य पाटन के अनुचित व्यापार व्यवहार द्वारा घरेलू उद्योग को होने वाली क्षति को समाप्त करना है ताकि भारतीय बाजार में मुक्त एवं पक्षपात रहित प्रतिस्पर्धा कायम हो सके जो देश के सामान्य हित में है। इसलिए, पाटन-रोधी उपाय लागू करने से किसी भी तरीके से संबद्ध देश से आयात प्रतिबंधित नहीं होंगे और इनसे उपभोक्ताओं को उत्पादों की उपलब्धता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

83. प्राधिकारी का यह मानने का भी प्रस्ताव है कि पाटन-रोधी शुल्क लगाने से भारत में उत्पाद की कीमत स्तर पर प्रभाव पड़ सकता है, लेकिन ऐसे पाटन-रोधी उपायों से भारतीय बाजार में उचित प्रतिस्पर्द्धा कम नहीं होगी। इसके विपरीत पाटन-रोधी उपाय करने से पाटन की पद्धतियों द्वारा अनुचित लाभ प्राप्त करने की अनुचित प्रक्रिया समाप्त होगी, घरेलू उद्योग में होने वाली गिरावट रुकेगी तथा उपभोक्ताओं की व्यापक पसंद की संबद्ध वस्तुओं की उपलब्धता बढ़ाने में सहायता मिलेगी। उपभोक्ता अभी भी आपूर्ति के दो अथवा उससे अधिक स्रोतों को बनाए रख सकते हैं।

ड. निष्कर्ष

84. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा किए गए अनुरोध और उसमें उठाए गए मुद्दों की जांच करने और रिकार्ड में उपलब्ध तथ्यों पर विचार करने के बाद, प्राधिकारी का यह निष्कर्ष है कि:

- विचाराधीन उत्पाद का निर्यात संबद्ध देश से भारत में उसके सामान्य मूल्य से कम कीमतों पर किया गया है जिसके फलस्वरूप पाटन हुआ है। घरेलू उद्योग को संबद्ध देश से विचाराधीन उत्पाद के पाटन के कारण आर्थिक क्षति हुई है। संबद्ध देश से पाटित आयातों के कारण आर्थिक क्षति हुई है।

ण. सिफारिशें

85. प्राधिकारी नोट करते हैं कि यह जांच शुरू की गई थी और इसे सभी हितबद्ध पक्षकारों को अधिसूचित किया गया था तथा निर्यातकों, आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों को पाटन, क्षति एवं कारणात्मक संबंधों के पहलुओं पर सकारात्मक सूचना देने के लिए समुचित अवसर दिया गया था। पाटनरोधी नियमावली के अंतर्गत निर्धारित प्रावधानों के संबंध में पाटन, क्षति और कारणात्मक संबंध की जांच शुरू करने तथा सकारात्मक पाटन मार्जिन स्थापित करने तथा इस प्रकार के पाटित आयातों से घरेलू उद्योग को हुई आर्थिक क्षति स्थापित करने के बाद प्राधिकारी का मत है कि पाटनरोधी शुल्क लगाना पाटन से बचाने तथा घरेलू उद्योग को क्षति को रोकने के लिए अपेक्षित है। इस कारण से प्राधिकारी इसे आवश्यक समझते हैं कि संबद्ध देश से संबद्ध वस्तुओं के आयातों पर नीचे दिए गए निर्धारित रूप में और तरीके से 5 वर्ष की अवधि के लिए अनंतिम पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाए।

86. प्राधिकारी द्वारा अपनाए जाने वाले कम शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए, प्राधिकारी 5 वर्ष की अवधि के लिए पाटन के मार्जिन और क्षति के मार्जिन में से कम के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को क्षति को दूर किया जा सके। तदनुसार, प्राधिकारी चीन जन गण के मूल के अथवा वहां से निर्यात की गई संबद्ध वस्तुओं के समस्त आयातों पर नीचे दी गई शुल्क तालिका के कॉलम-8 में किए गए उल्लेख के अनुसार की गई सिफारिश के अनुसार अनंतिम पाटनरोधी शुल्क की पुष्टि करने की सिफारिश करते हैं।

शुल्क तालिका

क्र.सं.	उप-शीर्ष अथवा टैरिफ मद*	वस्तुओं का विवरण**	मूल देश	निर्यातक देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि	यूओएम	मुद्रा
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	3824 40 90	सल्फोनेटेड नेफथालीन फोर्मलडिहाइड	चीन जनवादी गणराज्य	चीन जनवादी गणराज्य	शानडोंग वानशान कैमिकल कं. लि.	i. शानडोंग वानशान कैमिकल कं. लि. ii. हुबेई एजिंग कैमिकल कं. लि.	217.40	मी.ट.	अम.डॉ.
2	3824 40 90	सल्फोनेटेड नेफथालीन फोर्मलडिहाइड	चीन जनवादी गणराज्य	चीन जनवादी गणराज्य	ऊपर उल्लिखित से इतर अन्य कोई संयोजन		397.29	मी.ट.	अम.डॉ.
3	3824 40 90	सल्फोनेटेड नेफथालीन फोर्मलडिहाइड	चीन जनवादी गणराज्य	कोई भी	कोई भी	कोई भी	397.29	मी.ट.	अम.डॉ.
4	3824 40 90	सल्फोनेटेड नेफथालीन फोर्मलडिहाइड	कोई भी	चीन जनवादी गणराज्य	कोई भी	कोई भी	397.29	मी.ट.	अम.डॉ.

*सीमा शुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक है और विचाराधीन उत्पाद के विवरण के अनुसार शुल्क का निर्धारण किया जाएगा।

87. इस अधिसूचना के प्रयोजन से आयातों का पहुँच मूल्य सीमा शुल्क अधिनियम, के तहत सीमा शुल्क से यथा 1962 निर्धारित आंकलनीय मूल्य होगा और यह सीमा शुल्क अधिनियम, 3 की धारा 1975, क3, ख8, त शुल्कों को क के तह9 और 9 छोड़कर सभी सीमा शुल्क का लागू स्तर होगा।

88. इस अंतिम जांच परिणाम से उत्पन्न केंद्र सरकार के आदेश के विरुद्ध एक अपील सीमा प्रशुल्क अधिनियम के अनुसार सीमा शुल्क, उत्पाद शुल्क एवं सेवा कर अपीलीय अधिकरण के समक्ष दायर की जाएगी।

सुनील कुमार, अपर सचिव एवं निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(Department of Commerce)

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 30th December, 2017

FINAL FINDINGS

Subject: Anti-dumping duty investigation on the imports of Sulphonated Naphthalene Formaldehyde originating in or exported from China PR.

F. No. 14/15/2016-DGAD.—Having regard to the Customs Tariff Act 1975, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules 1995, as amended from time to time (hereinafter also referred to as the Rules) thereof;

A. BACKGROUND OF THE CASE

1. Whereas M/s Himadri Speciality Chemical Ltd. (hereinafter referred to as ‘petitioner’) had filed an application (also referred to as petition) before the Designated Authority (hereinafter referred to as the Authority) in accordance with the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Anti-Dumping Duty on Dumped articles and for Determination of injury) Rules, 1995 as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD Rules) for initiation of anti-dumping investigation concerning imports of “Sulphonated Naphthalene Formaldehyde” (hereinafter referred to as subject goods or product under consideration) originating in or exported from People’s Republic of China (hereinafter referred to as subject country).

B. PROCEDURE

2. The procedure as described herein below has been followed:
 - a. The Authority under the above Rules, received a written application from the petitioner on behalf of domestic industry of subject goods, alleging dumping of subject goods originating in or exported from subject country and resultant injury to the domestic industry and requesting recommendations for imposition of antidumping duty on imports of the subject goods from the subject country.

- b. On the basis of sufficient prima facie evidence of dumping of the subject goods, originating in or exported from the subject country, injury to the domestic industry and a causal link between the alleged dumping and injury, the Authority initiated an investigation into the alleged dumping and consequent injury to the domestic industry in terms of Rule 5 of the Rules to determine the existence, degree and effect of the alleged dumping of subject goods from the subject country and to recommend an amount of antidumping duty, which if levied on the imports of Sulphonated Naphthalene Formaldehyde, would be adequate to remove the 'injury' to the domestic industry.
- c. The Authority notified the Embassy/Representatives of the subject country in India about the receipt of the anti-dumping application before proceeding to initiate the investigations in accordance with sub-rule (5) of Rule 5 supra.
- d. The Authority issued a public notice dated 13th October, 2016 published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating anti-dumping investigation against imports of the subject goods from the subject country.
- e. The Authority forwarded a copy of the public notice to all the known exporters, importers and users association of the subject goods in India and advised them to make their views in writing within forty days from the date of the letter.
- f. The Authority provided a copy of the non-confidential version of application filed by the petitioner to the known exporters and the Embassy of the subject country in India in accordance with Rule 6(3) of the AD Rules. A copy of the application was also provided to interested party whenever requested.
- g. The Authority sent questionnaires to elicit relevant information to the following known exporters of subject goods in the subject country in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules.
 - i. M/s. Hubei Aging Chemical Co. Ltd.
 - ii. M/s. Hereun Industrial Development Ltd.
 - iii. M/s. Green Building Materials Co. Ltd.
 - iv. M/s. Zhejiang Chemicals Import and Export
 - v. M/s. Weifang Entachem Co. Ltd.
 - vi. M/s. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd.
 - vii. M/s. Weifang Hongle New Chemical Building Materials Co. Ltd.
 - viii. M/s. Pacific Spot Ltd.
 - ix. M/s. Shandong Laiwu Wenhe Chemicals Co. Ltd.
 - x. M/s. Jinan Yuansheng Chemical Technology Co Ltd.
- h. In response to the initiation notification, the following exporters/producers have filed questionnaire response along with legal submissions.
 - i. M/s. Hubei Aging Chemical Co. Ltd.
 - ii. M/s. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd.
- i. Questionnaire was sent to the following known importers/users associations of subject goods in India calling for necessary information in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules:
 - i. M/s. Radiant Enterprise chemicals and solvents LLP
 - ii. M/s. Gujarat Polysol Chemicals Pvt. Ltd.
 - iii. M/s. Rheoplast Technology Pvt. Ltd.

- iv. M/s Polygon Chemicals Pvt. Ltd.
 - v. M/s Don Construction Chemicals India Ltd.
 - vi. M/s BASF India Ltd.
 - vii. M/s W.R. Grace & Co Pvt. Ltd.
 - viii. M/s Sika India Pvt. Ltd.
 - ix. M/s Amorphos Chemicals Pvt. Ltd.
- j. In response to the initiation notification, the following Importers/user associations have filed Importer Questionnaire or written reply in response to the Initiation notification
- i. Hindcon Chemicals Limited
 - ii. M/s Radiant Enterprise chemicals and solvents LLP
 - iii. M/s Don construction Chemicals India Ltd.
- k. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by various interested parties in the form of a public file kept open for inspection by all interested parties. The public file was inspected by a number of interested parties a number of times. Interested parties, who requested inspection and copies of the documents from the public file, were provided with the same.
- l. The Authority accepted the confidentiality claims, wherever warranted after due examination and such information has been considered confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on a confidential basis, which was made available through public file.
- m. Further information was sought from the petitioner and other interested parties to the extent deemed necessary. Verification of the data provided by domestic industry was conducted to the extent considered necessary for the purpose of present investigation.
- n. Investigation was carried on for the period April, 2015 - March, 2016 (12 months) (hereinafter referred to as the 'period of investigation' or 'POI') with injury analysis covering the period 2012-2013, 2013-2014, 2014-2015 and the POI.
- o. Request was made to the Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S) and DG System Custom to arrange details of imports of subject goods for the past three years, and the period of investigation, and the said information was obtained from the DGCI&S and has been adopted for the purpose of the present investigation.
- p. The Authority has examined the information furnished by the domestic industry to the extent possible on the basis of guidelines laid down in Annexure III of the AD Rules to work out the cost of production and the non-injurious price of the subject goods in India so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.
- q. In accordance with Rule 6(6) of the Rules, the Authority provided opportunity to all interested parties to present their views orally in the first public hearing held on 11th August, 2017 which was attended by the

interested parties. All the parties who presented their views in the oral hearing were requested to file written submissions of these views for mutual exchange with opposing interested parties for filing rejoinders thereafter by others.

- r. Having regard to the Supreme Court judgement in Automotive Tyre Manufacturers Association Vs. Designated Authority (2011) a second oral hearing was conducted on 2nd November 2017 due to change in 'Designated Authority' post which all the parties who presented their views were requested to file written submissions of these views for mutual exchange with opposing interested parties for filing rejoinders thereafter by others.
- s. The submissions made by the interested parties during the course of this investigation, wherever found relevant, have been addressed by the Authority, in this document.
- t. Information provided by the interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non confidential version of the information filed on confidential basis.
- u. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has considered such parties as non-cooperative and recorded the findings on the basis of the facts available.
- v. A Disclosure Statement was issued on 22.12.2017 containing essential facts under consideration of the Designated Authority, giving time up to 27.12.2017 to furnish comments, if any, on Disclosure Statement. The Authority has considered post disclosure comments received from interested parties appropriately.
- w. '****' in this Final Finding represents information furnished by an interested party on confidential basis and so considered by the Authority under the Rules.
- x. The exchange rate for the POI has been taken by the Authority as Rs.65.91= 1 US\$.

C. PRODUCT UNDER CONSIDERATION AND LIKE ARTICLE

C.1 Views of the Domestic industry

3. The views of the domestic industry are as follows:

- a. The product under consideration in the present investigation, Sulphonated Naphthalene Formaldehyde, is a derivative of Naphthalene. Sulphonated Naphthalene Formaldehyde (SNF) Condensate is used as a water reducing admixture in construction industries for concrete. It is also used as dispersant for rubber chemicals, gypsum industries and specialty agro-chemicals industries. SNF is made from sulphonation of naphthalene and neutralization of the process by caustic soda. It is produced in 100 % powder form and in liquid form in the range of solid content from 40% - 44%.
- b. The main commercial use of Sulphonated Naphthalene Formaldehyde is for production of concrete admixtures, application in tanning industry, leather auxiliaries, textile auxiliaries, vat dyes, superior quality disperse dyes, agro dispersant formulations, rubber and latex emulsion.
- c. The subject goods fall under Chapter 38 of the Act under subheading no. 3824 40 90. However, the customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.

- d. There is no difference in Sulphonated Naphthalene Formaldehyde produced by the Indian industry and the product exported from the subject country. Goods produced by the Indian industry and imported from the subject countries are comparable in essential product characteristics such as physical & chemical characteristics, manufacturing process & technology, functions & uses, product specifications, pricing, distribution & marketing and tariff classification of the goods. Consumers can use and are using the two interchangeably. The two are technically and commercially substitutable and therefore subject goods produced by the domestic industry should be treated as like article to the goods imported from the subject country in accordance with the Anti-Dumping Rules.
- e. As regards different grades, it is submitted that whereas the majority of production by petitioner is SNF-C and supplied in liquid form in view of the cost savings, the imports are primarily in solid form in order to have savings in the freight. The product under consideration is consumed in liquid form only and even in those situations where the consumers buy the product in solid form, it is in fact converted into liquid form before consumption.
- f. The petitioner's data is in liquid form as the product under consideration is primarily produced and sold in liquid form. It is submitted that all the volumes can be expressed into solid and thereafter, all the relevant calculations could be worked out. Second option is to compare liquid with liquid; solids with solids. In any case, liquid form of the domestic product cannot be compared with solid form of the imported product, without due adjustment for material content in the two forms.
- g. Petitioner submitted that Category C constitutes 92% of petitioner's production in liquid form and 100% of production in solid form. In a situation, where Category C constitute 92.32% of petitioner's production in liquid form and 100% in solid form, it follows that in any case the cost of production information given by the company is representative of cost of production of Category C. Such being the case, the argument raised by the interested party is of no specific consequence in the facts of the case.
- h. Petitioner also submitted the import analysis of PUC during the period of investigation and stated that 20.85 % of imports were of C grade and 73.98 % of imports were unidentified. Thus, significant volume of imports cannot be identified in respect of the grade, which shows that these goods were invoiced without having regard to the grade of the product. If 73.98 % of the imports are unidentified, it must be concluded that the exporters and importers did not recognize difference in sulphate content as relevant criteria.
- i. It would thus be seen that Category C constitutes 92% of petitioner's production in liquid form and 100% of production in solid form. In a situation, where Category C constitute 92.32% of petitioner's production in liquid form and 100% in solid form, it follows that in any case the cost of production information given by the company is representative of cost of production of Category C.

C.2. Views of the other interested parties

4. The following submission has been made by the importers, consumers, exporters and other interested parties with regard to product under consideration and like article.
 - a. There is a price difference in various grades of SNF as the export is in powder/solid form with 92-93% solid content whereas the product produced by the domestic industry is in liquid form with 42-44% solid content. SNF is categorized in three different forms based on Sodium Sulphate content which is vital for differentiating the grades and has cost resulting into direct impact on Cost & Price. That one of the exporter

has only exported SNF-C Category to India which is the lowest in Cost and Price. It is also submitted that the Normal Value and Net Injurious Price based on Cost data of Domestic Industry shall be worked out in respect of SNF-C Category only.

- b. It may please be seen that most of the SNF sold by the Domestic Industry in liquid form is packed in drum whereas, goods exported by Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd. are packed in paper bags of 25 Kg. In view of the above, it is submitted that to make a fair comparison between Export Price & Normal Value & Landed Value & Non-Injurious Price, the impact of drum cost incurred by Domestic Industry shall not be considered.
- c. It has been claimed by the Domestic Industry that SNF in Powder form contains 100% solid contents. This is factually incorrect. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd. produces & exports SNF 92% solid contents. It is submitted that while converting cost of liquid SNF with purity ranging between 42- 46% (as claimed by the Domestic Industry), factor to convert the same may be used in 91-92% solid contents as produced & exported by Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd.
- d. It is hereby submitted that the applicant in the present Anti-dumping investigation is **“Himadri Speciality Chemical Limited”** and the same company is also applicant in another Anti-Dumping investigation concerning imports of **“Naphthalene in both its forms Crude Naphthalene”** originating in or exported from China PR, European Union, Russian, Iran and Japan and **“Refined Naphthalene”** originating in or exported from China PR, which basically serves as raw material to make Sulphonated Naphthalene Formaldehyde (SNF), hence the question here arise is that at what price the **Naphthalene “Raw Materials”** was transferred to make Sulphonated Naphthalene Formaldehyde(SNF). The documents relating to transfer pricing may be provided/filed with Designated Authority and if possible, the same may please be provided to us so we can file our comments to the same.

C.3. Examination by the Authority

5. The product under consideration is "Sulphonated Naphthalene Formaldehyde (SNF)". Sulphonated Naphthalene Formaldehyde is a derivative of Naphthalene. Sulphonated Naphthalene Formaldehyde (SNF) Condensate is used as a water reducing admixture in construction industries for concrete. It is also used as dispersant for rubber chemicals, gypsum industries and specialty agro-chemicals industries. SNF is made from sulphonation of naphthalene and neutralization of the process by caustic soda. It is produced in powder form and in liquid form in the range of solid content from 40% - 45% by the domestic Industry. During the POI, the subject goods produced by the domestic industry has solid content of 42.35.%.
6. The subject goods fall under Chapter 38 of the Act under subheading no. 3824 40 90. However, the customs classification is indicative only and is in no way binding on the scope of the present investigation.
7. As regards the contention that there are different forms of subject goods with significant price difference, the Authority notes that the subject goods exist in two forms, i.e., liquid and solid. Petitioner has sold both forms of subject goods in domestic market, mainly in liquid form. Petitioner has provided separate information on both the liquid and solid forms. However, imports from subject country is in solid form, therefore the comparison has been done after converting solid form into liquid form with relevant conversion factor.
8. As regards existence of different grades of subject goods such as grade A, B and C, the Authority notes that the difference in these alleged grades lies in sulphate content. Majority of subject goods are of Grade C and the domestic industry has also sold Grade C in the domestic market. Further, the domestic industry has submitted that

cost difference between SNF grades A, B, C is nominal thus there is no requirement of doing separate analysis for the alleged grade types as A, B and C. Further the significant volume of imports cannot be identified in respect of the grade.

9. After considering the information on record, the Authority notes that there is no known difference in the subject goods produced by the domestic industry and that imported from the subject countries. The subject goods produced by the domestic industry and the subject goods imported from the subject country are comparable in terms of characteristics such as physical and chemical characteristics, manufacturing process and technology, functions and uses, product specifications, distribution and market & tariff classification of the goods and are like articles. The consumers are using the two interchangeably. Thus, for the purpose of present investigation the subject goods produced by the applicant in India are being treated as like article to the subject goods being imported from subject country.

D. SCOPE OF DOMESTIC INDUSTRY & STANDING

D.1. Views of the Domestic industry

10. Following submissions have been made by the domestic industry with regard to scope and standing of the domestic industry:
- a. The petition was filed by M/s Himadri Speciality Chemicals Limited. The petition was supported by M/s Mangalore Chemicals and Fertilisers Limited.
 - b. The total domestic production of SNF in the POI is 76453MT. The share of petitioner alone is 36% and with the supporter it is around 60-70% of total domestic production. Hence, the petitioner constitutes a major proportion in Indian Production and therefore, the petitioner should be treated as “domestic industry” within the meaning of the Rules.
 - c. The petitioner has not imported the subject goods during the period of investigation, and further, is not related to any exporter or producer of the subject goods in China or any importer or user of the product under consideration in India within the meaning of Rule 2(b).
 - d. The petitioner company does have a shareholding in Shandong Dawn Himadri Chemical Industry Limited (SDHCIL) but the same is not involved in the production of subject goods. The related company in China has capacity for coal tar and oil. It is nowhere connected to production of subject goods and hence the question of exclusion in terms of Rule 2 (b) does not arise

D.2. Views of the other interested parties

11. The following submission was made by the producers/exporters/importers/other interested parties with regard to standing and scope of domestic industry.
- a. Data of other producers so provided in annexure 2.3 should not have been held confidential as by studying the same it can be analysed if it is only the applicant facing injury or there are some other reasons causing injury.
 - b. Additional information regarding related parties may be sought from the applicant company. (reference given to the issue raised in ‘Naphthalene’ on SDHCIL) The applicants claim of being the DI is questionable as it is clear from the speech of the Chairman that coal tar pitch is used to produce carbon black, naphthalene, advance carbon and naphthalene sulphonate etc. whereas the applicant has concealed the fact that they have a related company which is involved in such activities.

D.3. Examination of the Authority

12. The application was filed by M/s Himadri Speciality Chemicals Limited and was supported by M/s Mangalore Chemicals and Fertilisers Limited. The petitioner has neither imported the subject goods nor are they related to importers or exporters of subject goods. It is noted that the production of the petitioner constitutes a major proportion of total Indian production. It has been argued by the interested parties that the petitioner has concealed about it being related to a producer in China involved in production of subject goods. It is noted in this regard that the petitioner has shareholding in Shandong Dawn Himadri Chemical Industry Limited (SDHCIL), a company in China but the same is not involved in the production of product under consideration. The Authority has examined and notes that the petitioner's plant in China is neither producing naphthalene nor SNF. Domestic Industry has affirmed that they are procuring Coal Tar pitch domestically from China and modify it for global aluminium smelters and graphite electrode companies. Hence, the input is coal tar pitch and output is also a coal tar pitch. There is no generation of naphthalene or SNF in the process. Thus, there is no relationship of the petitioner with the company in China in terms of Rule 2(b) to render petitioner as ineligible domestic industry.
13. In view of the above the Authority considers the petitioner as the eligible domestic industry within the meaning of Rule 2 (b) of the Anti-Dumping Rules and the application satisfies the criteria of standing in terms of Rule 5 (3) of the Rules supra.

E. CONFIDENTIALITY AND OTHER ISSUES**E.1 Submissions by domestic industry**

14. The following submission was made by the domestic industry with regard to confidentiality and other issues.
- Information on other producer have been provided as per market intelligence. Further Annexure 2.3 has production details. The share of all other producers apart from the petitioner and the trend of the same can easily be ascertained from Annexure 2.3
 - Petitioner has provided sufficient information justifying initiation of the investigation. Petitioner has provided all information as required under the application proforma. As regards failure of evaluation of certain parameters in the write up, the petitioner submits that it is not necessary for the petitioner to evaluate all the parameters in the application. The petitioner is obliged to provide all relevant information which it has done.

E.2 Submissions by various interested parties

15. The following submission was made by the producers/exporters/importers/other interested parties with regard to confidentiality and other issues.
- The data of other producers so provided in annexure 2.3 should not have been held confidential as by studying the same it can be analysed if it is only the applicant facing injury or there are some other reasons causing injury.
 - The information provided is insufficient to initiate anti-dumping proceedings. The allegations in the petition are largely based on estimates and assumptions. Authority failed to analyse petition carefully otherwise would have held that the petition provides insufficient data. Emphasis has been laid on rule 5(3) (b) and 'US – Softwood Lumber from Canada' wherein it was stated that sufficient evidence must mean more than

allegations and conjectures. Grey Portland Cement from Mexico has also been referred with respect to the same.

- c. Present investigation initiation has not been based on facts so mentioned in the petition as all are contrary to claims made in proforma IV- A

E.3 Examination by the Authority

16. With regard to confidentiality of information, the Authority notes that the information provided by the domestic industry on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim in accordance with Rule 7 of the AD Rules. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims, wherever warranted and such information has been considered confidential and not kept open in public file. The Authority has also considered the confidential claims of other interested parties in accordance with the aforesaid rule and its consistent practice.
17. As regards the argument on the deficient information provided by the petitioner, the Authority notes that the information provided by the petitioner in the application was as per the proforma prescribed and only upon prima facie satisfaction of the merit of the case, the Authority initiated the present investigation.

F. Determination of Normal Value, Export Price and Dumping Margin

F.1 Views of the Domestic industry

18. The following submission was made by the domestic industry with regard to normal value, export price and dumping margin
 - a. The interested parties have not provided any evidence to show availability of public information. Petitioners have constructed normal value based on best available information. It is also relevant to point that if any such information is publicly available, the interested parties are free to establish that the import price is not a dumped price.
 - b. The investigation period considered by the Authority in the present case is April, 2015 to March, 2016 (12 months). The injury investigation period has been considered as the period 2012-13, 2013-14, 2014-15 and POI.
 - c. The purpose of fixation of POI is to consider a period when the existence of dumping causing injury is claimed and established. The date of determination is not relevant to the moot question of dumping causing injury to the domestic industry. Since the factum of dumping causing injury to the domestic industry is established based on investigation period, the conditions prevalent during the investigation period alone should be considered relevant, appropriate and necessary for the purpose.
 - d. The Chinese producers are required to be treated as non-market economy companies for the reason that the costs and prices in China do not reasonably reflect the market forces. Para 8 to Annexure-I specifies the parameters which should be considered for grant of market economy status. This also implies that unless these conditions are not fulfilled/ satisfied, the Chinese costs and prices cannot be adopted.
 - e. The consideration of market economy status is based on parameters prevailing during investigation period. Since the reason for rejection of Chinese costs and prices is distortion in the costs and prices in China due to the factors listed in Para 8 to Annexure-I, petitioner submits that it is the investigation period that is relevant to decide consideration of Chinese producers as market economy companies.

- f. In the context of rule 2(b), it is well established legal position that the imports by a domestic producer or its relationship with an exporter or importer are examined with reference to the investigation period. If POI alone is relevant for standing purposes, POI alone should be relevant for normal value determination.
- g. Chinese producers are required to be treated as companies operating under non-market economy environment and the Authority may proceed to determine the normal value on the basis of Para 7 of Annexure-I.
- h. Normal value could not be determined on the basis of price or constructed value in a market economy third country for the reason that the relevant information is not publicly available. The petitioners have claimed consideration of normal value on the basis of cost of production in India duly adjusted.
- i. The dumping margin from China is not only significant, but also substantial, thus establishing existence of significant dumping of the product under consideration in India. The import volume of China has remained significant throughout the present injury period.
- j. Since the prices/quotations of the producers of the subject goods were not publicly available in spite of efforts made by the domestic industry, the domestic industry has determined normal value in China on the basis of cost of production in India by taking the international price of the major raw materials and duly adjusted with selling, general and administrative expenses and considering the consumption norms of the petitioners.

F.2. Views of other interested parties

19. The following submission was made by the producers/exporters/importers/other interested parties with regard to normal value, export price and dumping margin.
- a. As China has been treated as a non-market economy in the past, practice of using a surrogate country should expire post the expiry of the protocol. The Appellate Body report on 'EC Fasteners' should have been referred and the same provides strong justification for China to automatically obtain market economy status after the expiry of Article 15. Under international law the principle of 'Pacta Sunt Servanda' is observed and this means that no party has to evade its obligations under international treaties for political consideration and under the excuse of domestic laws and so India should stop using surrogate country approach. Normal value must be determined as per the Chinese prices after December 2016.
 - b. It is also submitted that India no longer has a basis under WTO agreements for calculating normal value of China using the non-market methodology. Any such action would be inconsistent with article VI of the GATT. Reference has to be made to the external policies of European parliament
 - c. It is also stated that since Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd has been exporting the subject good to India directly and through an exporter also. It is requested that since both have filed separate responses both be granted individual duty rates.

F.3. Examination by the Authority

F.3.1 Determination of Normal Value – China

20. As regards the computation of normal value for China, the Authority notes that the factum of dumping causing injury to the Domestic Industry is established based on investigation period, the conditions prevalent during the

investigation period alone is relevant, appropriate and necessary for the purpose of present investigation. The Period of Investigation (POI) for the purpose of the present review is April, 2015 - March, 2016. Since the subparagraph of Article 15 was in existence during most of the period of investigation, the Authority may use a methodology that is not based on a strict comparison with domestic prices or costs in China if the producers under investigation cannot clearly show that market economy conditions prevail in the industry producing the like product with regard to manufacture, production and sale of that product. Moreover, no exporter has filed a market economy treatment questionnaire.

21. It is also noted that in the past three years, China PR has been treated as nonmarket economy country in anti-dumping investigations by India and other WTO Members. China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the presumption by the exporting country or individual exporters in terms of the Rules
22. At the stage of initiation, the Authority proceeded with the presumption that China PR is a non-market economy country. Upon initiation, the Authority advised the producers/exporters in China to respond to the notice of initiation and provide information relevant to determination of their market economy status. The Authority sent copies of the MET questionnaire to all the known producers/exporters for rebutting presumption of non-market economy in accordance with criteria laid down in Para 8(3) of Annexure-I to the Rules. The Authority also requested Government of China to advise the producers/exporters in China to provide the relevant information.
23. The Authority notes that the known Chinese producers/exporters and the Government of China have been adequately notified about the requirement of submission of information in the form and manner prescribed and adequate opportunity was also granted to them to make their submissions in this regard. Questionnaire response has been filed by one producer namely M/s. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd and its related exporter namely M/s. Hubei Aging Chemical Co. Ltd.
24. No other producers/exporters from China have filed questionnaires responses. Further, M/s. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd has also not claimed Market economy treatment by not filling a market economy treatment questionnaire.
25. In view of the above ,and in the absence of rebuttal of non-market economy presumption by any Chinese exporting company, the Authority considers it appropriate to treat China PR as a non-market economy country in the present investigation and proceeds with para-7 of Annexure-I to the Rules for determination of normal value in case of China PR.
26. As per Para 7 of Annexure I of the Anti-dumping Rules
 “In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments”

27. In view of the above, the normal value for the subject products imported from China PR into India has been determined on "any other basis" by considering best available information with regard to cost of production and after reasonable additions for selling, general & administrative expenses and reasonable profit margin. Accordingly, the normal value comes to 576.05 \$/MT for the POI.

F.3.2 Export Price for producer/exporter M/s. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd and its exporter M/s. Hubei Aging Chemical Co. Ltd.

28. The Authority noted that M/s. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd and its exporter M/s. Hubei Aging Chemical Co. Ltd being the related entities, therefore, Authority has determined weighted average export price for them as 358.65 USD /MT.

F.3.3 Export Price for all non-cooperative producers/exporters in China

29. For other producers/ exporters from China who have not participated / cooperated in this investigation, the Authority has determined the export price on the basis of best facts available in terms of Rule 6(8) of the Antidumping Rules. The normal value, net export price and dumping margin in respect of other producers/exporters of the subject goods is determined as mentioned in dumping margin table below.

F.3.4 Dumping Margin

30. Considering the Normal Values and the Export Prices as determined above, the dumping margin is calculated as below

Exporters	Normal Value (USD/MT)	Net Export price (USD/MT)	Dumping Margin (USD/MT)	Dumping Margin %	Dumping Margin % Range
Shandong Wanshan Chemical Co.Ltd/ Hubei Aging Chemical Co.Ltd	***	***	***	***	30-40
Residual	***	***	***	***	65-75

G. ASSESSMENT OF INJURY AND CAUSAL LINK

31. Rule 11 of Antidumping Rules read with Annexure –II provides that an injury determination shall involve examination of factors that may indicate injury to the domestic industry, after taking into account all relevant facts, including the volume of dumped imports, their effect on prices in the domestic market for like articles and the consequent effect of such imports on domestic producers of such articles....". In considering the effect of the dumped imports on prices, it is considered necessary to examine whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree.
32. The Authority notes that the application for imposition of antidumping duty has been filed by M/s. Himadri Speciality Chemicals Limited and is supported by M/s. Mangalore Chemicals and Fertilisers Limited. In terms of Rule 2(b) of the Rules the petitioner has been treated as the domestic industry for the purpose of this investigation. Therefore, for the purpose of this determination, the cost and injury information of the petitioner, constituting the domestic industry as defined in Rule 2(b), has been examined.

G.1 Views of the Domestic Industry:

33. The following submission was made by the domestic industry with regard to injury and causal link:

- a. The demand increased from 2012-13 to 2013-14. It declined in 2014-15 and further declined marginally as compared to the previous year in the POI. The imports also increased during 2013-14 and 2014-15 and had a slight decline in the POI. The imports were significantly high. Imports in absolute and relative terms have also followed the same trend and have been significantly high.
- b. Regarding price undercutting, the foreign producers have reduced their prices and are undercutting the domestic Price and it can be inferred from the table below:

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
Import Volume (converted in Liquid form)	MT	5,229	17,304	17,516	17,574
Assessable Value	Rs.Lacs	779	2,792	2,811	2,242
CIF price	Rs./Mt	14,897	16,136	16,047	12,760
Assessable Price	Rs./Mt	15,046	16,297	16,207	12,888
Customs Duty (Rate)	%	7.50%	7.50%	7.50%	7.50%
Customs Duty	Rs./Mt	1,128	1,222	1,216	967
Cess @ 3%	Rs./Mt	34	37	36	29
Landed price of imports	Rs./Mt	16,208	17,556	17,459	13,883
Net Selling Price	Rs./Mt	***	***	***	***
Price Undercutting	Rs./Mt	***	***	***	***
Price Undercutting (%)	%	30-35 %	65-75%	65-74%	45-55%

- c. The imports are depressing the prices of the domestic industry in the domestic market as the landed price of imports is much below the level of cost and sales prices of the domestic industry. The subject goods are forcing the domestic industry to sell the product under consideration at highly un-remunerative prices. There is significant price depression over the period despite the fact that there was no decline in the costs.

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
Cost of sales	Rs./Mt	***	***	***	***
Selling price	Rs./Mt	***	***	***	***
Landed value	Rs./Mt	16,208	17,556	17,459	13,883

- d. The Authority notes that capacity of the domestic industry alone is not par with the level of demand but if it is added to capacity of other domestic industry then together it would be sufficient to cater to Indian demand. But dumped imports by subject country could be a factor in sub-optimal capacity utilization of domestic industry.

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
Capacity	MT	68,000	68,000	68,000	68,000
Demand	MT	95,349	89,365	83,043	89,132

- e. Growth of the domestic industry is negative in production terms. The optimum level of sales and market share has not been achieved because of dumped imports. Even the present level of sales is being made at much less than the optimum prices causing high financial losses.
- f. The level of inventories is all too high because of dumping in the Country.
- g. Profits, profit before interest, cash profits and return on capital employed, all have remained very adverse throughout the injury period.
- h. Both dumping margin and injury margin in the POI are positive and significant.
- i. The domestic industry is not able to realize non injurious price for the product. The delta being achieved by the domestic industry is far below what is considered reasonable and fair globally.
- j. Volume of dumped imports has remained significant.
- k. Price reduction led by the dumped imports forced the domestic industry to reduce its prices.
- l. The price depression effect of dumped imports has resulted in significant increase in financial losses of the domestic industry.
- m. The domestic industry has been prevented from increasing its production, sales, capacity utilization and market share to the extent of capacities and despite existence of significant demand and capacities in the Country.
- n. Deterioration in profits, return on capital employed and cash profits are directly a result of dumped imports.
- o. The contribution margin of the domestic industry has steeply declined, which is largely due to dumping.
- p. The growth of the domestic industry became negative in terms of a number of economic parameters.

G.2 Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties

34. The following submission was made by exporters, importers, consumers and other interested parties with regard to injury and causal link:
- a. The performance of the Domestic Industry has remained stable and there is not much of change in the economic parameters.
 - b. There has been no drastic change in the landed value but the domestic sales price has remained the same which clearly indicates that the imports are not affecting performance of DI.
 - c. It is only the exports of the applicant that have deteriorated and not the domestic sales. Along with this, the captive consumption has also gone down which may have affected the applicant.
 - d. The market share has also remained about the same. Moreover, there is a decline in the inventories of the applicant.
 - e. A major cause of injury is the increased number of employees and also the increased wages.
 - f. The capacity utilization has shown hardly a decrease as the same was 55.31 in base year and 40.24 during POI.
 - g. Domestic industry also remained shut down for four months from May '15 to August '15. The same needs to be adequately seen by the Authority, injury, if any can be because of the shutdown.

G.3 Examination by the Authority

35. The Authority has taken note of submissions made by various interested parties. The Authority has examined the injury to the domestic industry in accordance with the Antidumping Rules and has considered the submissions made by the interested parties.

36. The AD Rules require the Authority to examine injury by examining both volume and price effect. A determination of injury involves an objective examination of both (a) the volume of the dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like article and (b) the consequent impact of these imports on domestic industry. With regard to the volume of dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in the dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. With regard to the effect of the dumped imports on prices the Authority is required to consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree.
37. As regards the consequent impact of dumped imports on the domestic industry, Para (iv) of Annexure II of Antidumping rules states as under: -
- (iv) The examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry concerned, shall include an evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including natural and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices; the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.*
38. It is not necessary that all parameters of injury should show deterioration. Some parameters may show deterioration; while some may show improvement. The Designated Authority considers all injury parameters and thereafter concludes whether the domestic industry has suffered injury due to dumping or not.
39. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and arguments in the submissions. The imported quantity in solid form was converted into liquid form for analysing the economic injury parameters on principle of comparison of apple to apple basis. The constructed normal value and non-injurious price was worked out after converting the liquid form into solid form to make it relevant and comparable with the imports coming in solid form.

a. **Assessment of Demand**

40. For this purpose, demand or apparent consumption of the product in India is taken as the sum of domestic sales of the Indian producers and imports from all sources, Share of imports from the subject country in demand/consumption in India determined by the Authority is as under-

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	2015-16
Sales of Domestic Industry	MT	***	***	***	***
Sales of Other Indian Producer	MT	***	***	***	***
Subject country-Imports (converted in liquid form)	MT	5,229	17,304	17,516	17,574
Other Countries-Imports	MT	4,643	-	-	-
Total demand/consumption	MT	95,349	89365	83,043	89,132

41. The Authority notes that demand has declined till 2014-15 and has increased in POI, but is lower than demand in base year: 2012-13. Sales of domestic producers has also declined to base year.

G.3.2 Volume Effect of Dumped Imports - Import Volumes and Share of Subject Country

42. With regard to the volume of the dumped imports, the Authority is required to consider whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute terms or relative to production or consumption in India. The Authority has examined the volume of imports of the subject goods from the subject country and other countries based on the transaction-wise import data provided by DGCI&S data. The import volumes of the subject goods and share of the dumped import during the injury investigation period are as follows:

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Subject Country Imports (converted in Liquid form)	MT	5,229	17,304	17,516	17,574
Other Countries Imports	MT	4,643	-	-	-
Total Imports	MT	9,872	17,304	17,516	17,574
Share of Imports in total Imports					
Share of subject countries	%	52.97	100.00	100.00	100.00
Share of other countries	%	47.03	-	-	-
Subject Country Imports in relation to					
DI production	%	26%	63%	73%	64%
Consumption	%	10%	19%	21%	20%

43. Imports have increased in injury period. Almost entirety of imports is from subject country. Further imports in relation to production and consumption are also significant in the POI.

G.3.3 Price Effect of the Dumped imports on the Domestic Industry

44. With regard to the effect of the dumped imports on prices, Annexure II (ii) of the Rules lays down as follows:

“With regard to the effect of the dumped imports on prices as referred to in sub-rule (2) of rule 18 the Designated Authority shall consider whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports as compared with the price of like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increase which otherwise would have occurred to a significant degree.”

45. It has been examined whether there has been a significant price undercutting by the dumped imports of the price of the like product in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress prices to a significant degree or prevent price increases, which otherwise would have occurred, to a significant degree. The impact of dumped imports on the prices of the domestic industry has been examined with reference to the price undercutting, price underselling, price suppression and price depression, if any.

Price Undercutting

46. In order to determine whether the imports are undercutting the prices of the domestic industry in the market, the Authority has compared landed price of imports after converting the solid form in to liquid with the appropriate conversion factor i.e. 42.35%(solid content) with net sales realization of the domestic industry. In this regard, a comparison has been made between the landed value of the product from each of the subject countries and the average selling price of the domestic industry net of all rebates and taxes, at the same level of trade. The prices of the domestic industry were determined at ex-factory level.

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Net Selling Price	Rs/MT	***	***	***	***
Landed Price	Rs/MT	16,208	17,556	17,459	13,883
Price undercutting	Rs/MT	***	***	***	***
Price undercutting	%	***	***	***	***
Price undercutting	% (Range)	30-40	70-80	70-80	45-55

47. The Authority notes that the landed price of imports is much below the level of the selling price of the domestic industry. Imports are thus undercutting the prices of the domestic industry.

Price Underselling

48. The Authority has also examined price underselling suffered by the domestic industry on account of dumped imports from the subject country. As the import are coming in solid form, the NIP was determined for solid form with the appropriate conversion factor. Comparison of Non Injurious Price of the domestic industry with weighted average landed price of imports shows as follows:

S.N.	Particulars	China (Rs/MT)	China (US\$/MT)
1	Landed Price	32,782	497.38
2	Non-Injurious Price	***	***
3	Price underselling	***	***
4	Price underselling	***	***
5	Price underselling (Range)	45%-55%	45%-55%

49. It is noted that the landed price of imports were below the non-injurious price of the domestic industry. The Authority notes that the domestic industry has suffered price underselling during the investigation period on account of imports of the subject goods from the subject country.

Price Suppression and Depression

50. In order to determine whether the dumped imports are depressing the domestic prices or whether the effect of such imports is to suppress prices to a significant degree and prevent price increases which otherwise would have occurred to a significant degree, the Authority considered the changes in the costs and prices over the injury period. The position is shown as per the Table below.

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Cost of Sales	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	134	137	104

Selling Price	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	140	138	95
Landed Price	Rs/MT	***	***	***	***
Trend	Index	100	141	140	111

51. It is noted that, both, cost of sales and selling price of the domestic industry declined over the injury period. However, decline in selling price is much more than the decline in cost of sales. The selling price has remained below the level of cost of production in the Period of Investigation except in 2013-14. Landed price of imports have remained below the level of cost and selling price of the domestic industry. Thus, imports indicate depressing effect on the domestic prices in the domestic market.

G.3.4 Impact on Economic Parameters of the Domestic Industry

- a) Annexure II to the Anti-dumping Rules requires that determination of injury shall involve an objective examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of like product. The Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow, inventories, employment, wages, growth and the ability to raise capital investments. An examination of performance of the domestic industry indicates that the domestic industry has suffered material injury. The various injury parameters relating to the domestic industry are discussed below:

b) Capacity, Production, Capacity Utilization and Sales

52. The performance of the domestic industry with regard to production, domestic sales, capacity & capacity utilization is as follows:

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Capacity	MT	***	***	***	***
Production	MT	***	***	***	***
Capacity Utilization	%	***	***	***	***
Sales volume	MT	***	***	***	***

53. It is noted that production and sales of the domestic industry have declined over the injury period despite sufficient demand in the domestic market. Capacity utilization of the domestic industry has also declined over the injury period.

c) Profits, Return on Capital Employed and Cash Profit

54. The cost of sales, selling price, profit/loss, cash profits and return on investment of the domestic industry has been analyzed as follows:

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Cost of Sales	Rs./MT	***	***	***	***

	Index	100	134	137	104
Selling Price	Rs./MT	***	***	***	***
	Index	100	140	138	95
Profit/ (Loss) per unit	Rs./MT	***	***	***	***
	Index	-100	2	-116	-273
Profit/ (Loss) – Total	Rs.Lacs	***	***	***	***
	Index	-100	2	-116	-273
Cash Profit	Rs.Lacs	***	***	***	***
	Index	-100	5,774	597	-6,477
PBIT	Rs.Lacs	***	***	***	***
	Index	100	769	293	-325
Return on Investment	%	***	***	***	***

55. The Authority notes that the domestic industry suffered financial losses in terms of profit, profit before interest and cash profits in the base year, has marginal profit in 2013-14 and declined thereafter. The domestic industry has claimed that dumping has occurred throughout the injury period. The losses have further intensified in the POI. Return on capital employed is also negative during the period of investigation.

d) Market Share in Demand

56. The effects of the dumped imports on the market share in demand of the domestic industry have been examined as below:

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Sales of Domestic Industry	%	***	***	***	***
Sales of Other Indian Industry	%	***	***	***	***
Subject countries-Imports	%	5.48	19.36	21.09	19.72
Other Countries-Imports	%	4.87	-	-	-
Total	%	100	100	100	100

57. The Authority notes that the market share of the domestic industry has declined from base year. Further, market share of the domestic producers as a whole has also declined over the injury period whereas market share of imports from subject country has increased. It indicates that dumping of the product is impacting the market share of the domestic industry to an extent.

e) Employment, Wages and Productivity

58. The position with regard to employment, wages and productivity is as follows:

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
No. of Employees	Nos	***	***	***	***
Trend	Index	100	91	102	104
Wages	Rs Lacs	***	***	***	***
Trend	Index	100	90	85	101

59. The Authority notes that employment level has remained the same and the same trend is in wages also.

f) Inventory

60. The data relating to inventory of the subject goods are shown in the following table:

Particulars	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Opening Stock	MT	***	***	***	***
Closing Stock	MT	***	***	***	***
Average Stock	MT	***	***	***	***
Average stock (Index)	MT	100	108	85	76

61. The Authority notes that level of inventories with the domestic industry have declined as compared to base year.

g) Magnitude of Dumping

62. It is noted that imports from the subject country are entering the country at dumped prices and the margin of dumping are above de-minimus limits and significant.

h) Ability to raise capital investment

63. It is seen that the domestic industry's capacity is largely unutilised and the industry suffering losses. Thus, the ability to raise capital investment in such a situation appears to be weakened.

i) Growth

64. The data relating to growth of the domestic industry is shown in the following table:

Growth	Unit	2012-13	2013-14	2014-15	POI
Production	Y/Y	-	***	***	***
Domestic Sales	Y/Y	-	***	***	***
Cost of sales	Y/Y	-	***	***	***
Selling price	Y/Y	-	***	***	***
Profit/Loss	Y/Y	-	***	***	***
ROI	Y/Y	-	***	***	***
Cash Profit	Y/Y	-	***	***	***

65. The Authority notes that growth of the domestic industry has lowered in some parameters.

j) Factors Affecting Domestic Prices

66. The examination of the import prices from the subject country, change in the cost structure, competition in the domestic market, factors other than dumped imports that might be affecting the prices of the domestic industry in the domestic market shows that the landed value of imported material from the subject country is below the selling price and the non-injurious price of the domestic industry, thereby underselling in the Indian market. The authority notes that the prices of the product under consideration in general should move in tandem with the prices of key raw materials and the domestic industry has been fixing its prices considering these input prices and landed price of imports. Domestic industry has claimed that since the landed price of the dumped imports is so low, the domestic industry had no option but to align its prices to the market prices, which are dictated by the prices offered by the foreign producers in subject countries. Thus, the landed value of subject goods from the subject country is an important factor for determination of domestic prices.

Conclusion on Injury

67. After examining the volume and price effects of imports of subject goods from subject countries and its impact on the domestic industry, it is noted that there is an absolute increase in the volume of imports of subject goods from subject country over the injury period and imports in relative terms is significant. Imports are significantly undercutting the prices of domestic industry. Further, the domestic industry has suffered price depression on account of imports of subject goods from subject country. With regard to consequent impact of the dumped imports on the domestic industry, it is noted that the performance of the domestic industry has deteriorated in respect of sales, production, capacity utilisation, profit, cash flow and return on investment in the period of investigation as compared to the base year. The domestic industry is running into financial losses.

G.3.5 Other Known Factors & Causal Link

68. The Authority has noted other factors listed under the Antidumping Rules which could have contributed to injury to the domestic industry for examination of causal link between dumping and material injury to the domestic industry.

Imports from third countries

69. The Authority has examined import data of the subject goods obtained from DGCI&S on transaction-wise basis and notes that almost entirety of imports is from the subject country.

Contraction in demand

70. The demand for the subject goods has declined marginally as compared to the base year. However, there is sufficient demand for the capacity built by the domestic industry. Further decline in sales and production is much more than the decline in demand as compared to the base year. Thus, decline in demand has not caused injury to the domestic industry.

Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers

71. There is no trade restrictive practice which could have contributed to the injury to the domestic industry.

Developments in technology

72. The existing technology and process adopted by the domestic industry is comparable with foreign producers.

Changes in pattern of consumption

73. The pattern of consumption with regard to the product under consideration has not undergone any change. Change in the pattern of consumption is unlikely to contribute to the injury to the domestic industry.

Export performance

74. Domestic industry has exported around 10% of their total production in POI. Further, during the previous three years, the proportion of exports were around 13% except in 2013-14 when it was 27% which could be attributed to the denominator effect on account of decrease in total production. Though the exports in absolute quantitative terms have declined from the base year but their share in total sales remains more or less same. Therefore, injury to the domestic industry seems to be primarily on the account of domestic operations only.

Performance of the domestic industry with respect to other products

75. The performance of other products being produced and sold by the domestic industry has not affected the assessment made by the Authority of the domestic industry's performance. The information considered by the Authority is with respect to the product under consideration only.

Factors establishing causal link

76. Analysis of the performance of the domestic industry over the injury period shows that the performance of the domestic industry has deteriorated due to dumped imports from subject country. Causal link between dumped imports and the injury to the domestic industry is established on the following grounds:
- The imports prices are much below the level of cost of production of the domestic industry.
 - The reduction in the prices by the domestic industry is due to low price offered by the exporters from subject country.
 - As a result of significant price difference, the performance of the domestic industry has deteriorated in terms of profits, cash profits (cash flows) and return on investments. Thus, the deterioration in performance of the domestic industry is due to dumping of the product in the Country.
 - Deterioration in profits, cash flow, return on capital employed are a result of dumped imports;
 - The Authority has determined non-injurious price for the domestic industry. For this purpose, the Authority has considered best consumption norms of the raw materials & utilization. The Authority has segregated and excluded injury suffered by the domestic industry due to other factors, in accordance with the provisions of Annexure-III to the Rules.

H. MAGNITUDE OF INJURY AND INJURY MARGIN

77. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority in terms of Annexure III to the AD Rules has been compared with the landed value of the imports from the subject country for determination of injury margin during the POI and the injury margin so worked out is as under:

Particulars	China (Rs/MT)	China (US\$/MT)
Non Injurious Price (NIP)	***	***
Landed Price	32,782	497.38
Injury Margin	***	***
Injury Margin (Range)	45-55	45-55

78. It is seen that the injury margin for the subject country is positive and substantial.

I. POST DISCLOSURE COMMENTS

79. The post disclosure submissions have been received from the interested parties. The issues raised therein have already been raised earlier during the investigation and also addressed appropriately. However, for the sake of clarity the submissions by the interested parties are being examined as below:

I.1 Views of the Domestic Industry

80. The Domestic Industry made the following submissions:

- The domestic industry has sold PUC in both of its form in domestic market, and separate information has been provided for both liquid and solid forms. Cost difference between grades A, B and C is nominal so no requirement of doing separate analysis for the alleged grade types.
- Petitioner has a shareholding in Shandong Dawn Himadri Chemical Industry Limited (SDHCIL) but the same is not involved in the production of subject goods. The related company in China has capacity for coal tar pitch and oil and is in no way related to the production of SNF or naphthalene. Thus, the said company is nowhere connected to production of subject goods and the question of exclusion in terms of Rule 2 (b) does not arise.
- DA has determined normal value based on best information available and so cost of the industry has been considered. The notional cost elements are only for NIP determination and do not represent best available

- information with regard to cost of production. Thus, actual cost should be considered for normal value determination. The normal value and dumping margin be revised accordingly.
- iv. Imports in absolute terms and in relative terms are at significantly high level in the POI. Imports from subject country have increased more than three folds in the POI as compared to the base year.
 - v. Market share of the DI has declined whereas that of the subject country has only increased over the injury period.
 - vi. Landed price of imports remained significantly below the level of cost, selling price offered by the domestic industry and NIP of the domestic industry.
 - vii. Price undercutting and price underselling are positive.
 - viii. Despite sufficient demand the production, sales and capacity utilization of the domestic industry declined over the injury period.
 - ix. The profits, cash flow and ROI are significantly negative. Chinese producers reduced the prices for the product significantly, which led to significant financial losses, negative ROI and negative cash flows.
 - x. Form of anti-dumping duty should be fixed quantum of anti-dumping duty (fixed form of duty).
 - xi. Duty be imposed in terms of US\$ in the final determination. Rupee has depreciated significantly and so, definitive duties may kindly be expressed in US\$. Depreciation of INR has impacted costs of the raw materials, utilities and other costs.

I.2 Views of Exporters, Importers, Consumers and other Interested Parties

- i. The Accession Protocol expired on 11th Dec, 2016 and after that no country will be able to derogate from the standard rules on determination of normal values while dealing with imports from China. This implies that Indian anti-dumping regulations cannot allow for determining normal value on a basis other than the domestic prices of China else China can challenge the same as being inconsistent with the WTO obligations.
- ii. Calculation of export price, landed value and the range of injury margin was not provided. Information as received from the Authority is not sufficient and does not provide the basis of calculation of export price and landed value.
- iii. The basis for calculating the range of injury margin as 58-127% is unknown. Landed cost is much more than what is stated in petition and Injury Margin as indicated by the Authority is much higher than what has been worked out for China PR.
- iv. There is no logic for deducting 1% as Commission since direct exports were made by both the responding parties and no middle men were involved.
- v. M/s. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd. and M/s. Hubei Aging Chemical Co. Ltd. are not related companies. These companies are not related to each other. M/s. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd. provided list of related companies along with Exporters Questionnaire Response wherein no information in respect of M/s. Hubei Aging Chemical Co. Ltd. as related company has been given. M/s. Hubei Aging Chemical Co. Ltd. has only sold the subject goods produced by M/s. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd. in Indian market.
- vi. Both producer and trader are independent and separate entities so separate rate of duty be worked out for them individually.
- vii. Normal Value has been calculated on "any other basis" and such basis is unknown. Authority is requested to specify method used for calculation of Normal Value. It is obligatory on part of the Authority to inform all concerned parties on its decision of basis to be adopted before issuance of Disclosure Statement. Basis adopted in Disclosure Statement does not meet standards prescribed under Law for determination of Normal Value in respect of Non-Market Economy countries.

- viii. Difference in price underselling and injury margin. Inconsistent information has been provided in different paras of Disclosure Statement. Different injury margins are calculated with the same data. Authority to provide accurate injury margin.
- ix. Inconsistent basis of comparison of Indian products and imported products. Some calculations are done after converting solids into liquid and some are for solid forms. All calculations should be done on one basis.
- x. Claims of ROCE are inflated. A return of 22% on average capital employed for PUC has been assumed to be reasonable. The NIP determined by the Authority is highly inflated and not based on real situations. Elements of cost of production need to be examined for working out the NIP. The Authority should adopt ROCE earned by industry when there was no allegation of dumping as reasonable profit margin and not 22% ROCE.
- xi. 22% ROCE is incorrect because - Debt portion of Capital Employed which attracts about 10 to 12% interest rate is provided 22%. This results in providing more than 22% return on Net Worth portion of Capital Employed; in recession allowing such a high return to DI is totally incorrect.

I.3 Examination by the Authority

81. It is noted that the issues raised at post disclosure stage have already been examined by the Authority in above relevant paragraphs. However, for the sake of the clarity on the submissions they are addressed as below:
- i. As regards the construction of normal value, the Authority reiterates that the normal value is constructed having regard to para-7 of Annexure-I for the purpose of present investigation. It has been constructed considering optimum consumption norms of major raw materials as per information provided by the domestic industry, international price of major raw-materials, conversion cost, interest, SGA expenses, etc. at the levels allowed for the domestic industry along with a reasonable profit on the cost of production.
 - ii. As regards the claim of the exporters from China on market economy treatment, the same had been addressed at relevant heading. Further, the Authority had sent copies of exporter's questionnaire on market economy treatment (MET) to exporters in China PR. However, no producer/exporter has claimed MET. In view of the above, the Authority considers it appropriate to proceed with para-7 of Annexure I to the Rules for determination of normal value in case of China PR.
 - iii. As regards the argument on calculation of injury margin, the Authority notes that NIP and cost of production has been determined as per Annexure III of Custom Notification No. 15/2011-customs (N.T) dated 1st March 2011 and the provisions of the rules and the uniform practice followed in the Directorate for the calculations.
 - iv. As regards the argument that producer and exporter are separate entities and separate margins should be determined, it is noted that the producer has exported goods largely through the trader, who has also responded to the investigation, and has also made exports directly as well. Separate margins on both channels have been worked out and a weighted average margin has been worked out for producer as per the past practice of the Authority.
 - v. As regards the argument on Return on Capital Employed, the Authority has considered the return as per the consistent practise followed in determination of Non Injurious Price.

J. Indian Industry's Interest & other issues

82. The Authority holds that the purpose of anti-dumping duties, in general, is to eliminate injury caused to the domestic industry by the unfair trade practices of dumping so as to re-establish a situation of open and fair competition in the India market, which is in the general interest of the country. Imposition of anti-dumping

measures is not to restrict the imports from the subject countries in any way, and to affect the availability of the products to the consumers.

83. The Authority holds that though in the event of imposition of anti-dumping duties the price level of product in India may be affected but fair competition in the Indian market will not be reduced by such anti-dumping measures. On the contrary, the anti-dumping measures may mitigate the unfair advantage gained by dumping practices, which would arrest the decline of the domestic industry and help maintain availability of wider choices to the consumers of subject goods. Consumers could still maintain two or more sources of supply.

K. CONCLUSIONS

84. After examining the issues raised and submissions made by the interested parties and facts made available before the Authority as recorded in this finding, the Authority concludes that:

- The product under consideration has been exported to India from the subject country below its normal value, resulting in dumping.
- The Domestic Industry has suffered material injury due to dumping of the product under consideration from the subject country.
- The material injury has been caused by the dumped imports from the subject country.

L. RECOMMENDATION

85. The Authority notes that the investigation was initiated and notified to all interested parties and adequate opportunity was given to the exporters, importers and other interested parties to provide positive information on the aspects of dumping, injury and causal link. Having initiated and conducted the investigation into dumping, injury and the causal link thereof in terms of the Anti-Dumping Rules and having established positive dumping margins as well as material injury to the Domestic Industry caused by such dumped imports, the Authority is of the view that imposition of anti-dumping duty is required to offset dumping and injury. Therefore, the Authority considers it necessary to recommend imposition of definitive anti-dumping duty on imports of subject goods from the subject country in the form and manner described hereunder for a period of 5 years.

86. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of definitive anti-dumping duty equal to the lesser of margin of dumping and margin of injury, for a period of 5 years from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government, so as to remove the injury to the Domestic Industry. Accordingly, the anti-dumping duty equal to the amount indicated in Col No.8 of the table below is recommended to be imposed on all imports of the subject goods originating in or exported from the subject country.

S.N.	Sub-Heading or Tariff Item*	Description of Goods	Country of origin	Country of Export	Producer	Exporter	Duty Amount	UOM	Currency
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	3824 40 90	Sulphonated Naphthalene Formaldehyde	China PR	China PR	Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd	i. Shandong Wanshan Chemical Co. Ltd ii. Hubei Aging chemical Co. Ltd	217.40	MT	US\$
2	3824 40 90	Sulphonated Naphthalene Formaldehyde	China PR	China PR	Any combination other than mentioned above		397.29	MT	US\$

3	3824 40 90	Sulphonated Naphthalene Formaldehyde	China PR	Any	Any	Any	397.29	MT	US\$
4	3824 40 90	Sulphonated Naphthalene Formaldehyde	Any	China PR	Any	Any	397.29	MT	US\$

* Custom classification is only indicative and the determination of the duty shall be made as per the description of PUC.

87. Landed value of imports for the purpose of this Notification shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 (52 of 1962) and includes all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the said Act.

88. An appeal against the order of the Central Government arising out of this final finding shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

SUNIL KUMAR, Addl. Secy. & Designated Authority